राजपथ पर णमोकार मंत्र की गूँज

26 जनवरी 2013 को गणतंत्र दिवस पर निकाली गई परेड़ में छत्तीसगढ़ की झाँकी में जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा की अनदेखी छटा देखने को मिली। राजपथ पर छत्तीसगढ़ की इस झाँकी में सिरपुर की प्रसिद्ध खुदाई में निकली जैन प्रतिमाओं और बौद्ध प्रतिमाओं को सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया और णमोकार महामंत्र का उच्चारण हुआ।

संकलन - मुनिश्री अभयसागरजी, प्रभातसागरजी एवं पूज्यसागरजी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - knowledge.sanskarsagar.org

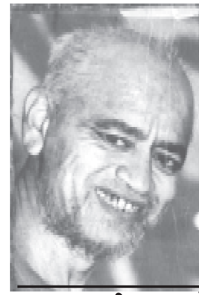

संस्कार सागर

• वर्ष : 18 • अंक : 213 • जनवरी 2017

• वीर नि.संवत 2543 • विक्रम सं. 2072 • शक सं. 1938

आदरणीय पाठकों के लिए विशेष सूचना : आपके पास भेजी जा रही सदस्यता सूची आपकी स्लिप में जो जानकारियां नहीं है, अथवा गलत है यदि आवश्यक हो तो जानकारी संस्कार सागर कार्यालय में पत्र द्वारा अथवा फोन से सूचित करें। आप मोबाइल पर एसएमएस भी कर सकते हैं :– फोन नं. : 0731-2571851, मो. :8989505108, 98272-82170, 8717924109

मई 2017 से संस्कार सागर 18 वर्ष पूर्ण करके 19 वें वर्ष में प्रवेश कर रहा है। जिसका वार्षिक शुल्क 150/- रु. अप्रैल 2017 तक पूरा हो गया है। **पत्रिका को सुचारु रूप से प्रकाशित करने के लिए आप अपना सदस्यता शुल्क शीघ्र ही भेजकर सहयोग करें।**

आजीवन सदस्यों के लिए 15 वर्ष तक पत्रिका भेजी जाती हैं इस पत्रिका के 15 वर्ष अप्रैल 2014 में चुके हैं अतः आप 5001 रु. की राशि जमा कर संरक्षक सदस्य बनकर पीढ़ी दर पीढ़ी (सदैव) पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं। जिन पाठकों के 4000रु. बाकी जा रहे हैं वह पहले आजीवन सदस्य थे। अब उनकी राशि कम कर संरक्षक बनाया जा रहा है यदि आप पुनः आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो 1500/- की राशि भेज सकते हैं।

4. जिन सदस्यों की पिछली राशि बाकी है उसकी जानकारी इसी पत्रिका में दी जा रही है। अतः आप शीघ्र ही निम्नलिखित खातों में राशि जमा कर अथवा सीधे भेज कर या आपके यहां पहुँचने वाले हमारे अधिकृत प्रतिनिधि को देकर अनुगृहीत करें। बैंक में राशि चेक द्वारा जमा करने पर कोई शुल्क नहीं कटता है अतःचेक द्वारा जमा करें।

आयसीआयसीआय	भारतीय स्टेट बैंक	ओरिएंटल बैंक ऑफ कॉमर्स	आईडीबीआई बैंक
संस्कार सागर	**संस्कार सागर**	**ब्र. जिनेश मलैया**	**श्री दिगम्बर जैन युवक संघ**
004105013578	63000704338	07882151004198	15510400037022

सदस्यता सूची का प्रारुप

सदस्यता क्र.		सदस्यता आरंभ–	
सदस्यता श्रेणी	बकाया राशि		
सदस्य का नाम			
पता			
गाँव/शहर	जिला	राज्य	पिनकोड
फोन : एसटीडी ....नंबर............मो..............			

प्रतियोगिताएं :अ.भा. संस्कार सागर परीक्षा : 27 : वर्ग पहेली : 64

प्रेरणा स्रोत : संत शिरोमणि परम पूज्य 108 आचार्य
श्री विद्यासागरजी म. के प्रिय शिष्य
ऐलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज
•
प्रधान संपादक : ब्र. जिनेश मलैया
•
प्रबंध संपादक :
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़
•
कार्यकारी संपादक
ब्र. पं. सुदेश जैन ''कोठिया''
इन्द्रप्रस्थ कॉलोनी, खुरई– 470117
•
सलाहकार संपादक
हुकुमचंद सांवला, इन्दौर
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली
•
महिला संपादक : डॉ. ज्योति जैन, खतौली
•
प्रकाशक : श्री दिगंबर जैन युवक संघ
कार्यालय
संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंच बालयति मंदिर
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–2571851
मो. : 89895-05108, 8717924109
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : mail@sanskarsagar.org
sanskarsagar@yahoo.co.in

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें। बकाया राशि में त्रुटि हो तो सुधार हेतु हमें सूचित करें।
अपने शहर के स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की शाखा में एकाउंट नंबर संस्कार सागर : 63000704338 (IFSC Code : SBIN0030463) में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकते हैं।

सदस्यता शुल्क
वार्षिक : **150/-** आजीवन : **1500/-**

• भारतीय स्टेट बैंक में ब्र. जिनेश मलैया के खाता क्र. 30682289751 (IFSC Code :SBIN0011763),
• ओरिएन्टल बैंक ऑफ कामर्स में खाता क्र. 07882151004198 (IFSC Code : ORBC0100788)
• श्री दिगंबर जैन युवक संघ का आईडीबीआई बैंक में खाता क्र. 155104000037022
• श्री दिगम्बर जैन युवक संघ संस्कार सागर आईसीआईसीआय बैंक में खाता क्र. 004105013578 (IFSC Code : ICIC0000041) में भी राशि जमा कर सकते हैं।

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होते हैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

• श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।
• आवरण एवं आंतरिक सज्जा : नीरज गुप्ता, इन्दौर 97542 40305 फोटो संयोजन– *इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू'*, इन्दौर

पाती पाठकों की....

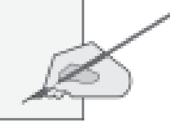

• **सम्पादक महोदय,** विगत अंक दिसम्बर 2016 के अंक में अनादिकाल से शीर्षक वाली कहानी को पढ़ा। कहानी मार्मिक और हृदयस्पर्शी थी। धर्मस्थल प्रभु परमात्मा का ध्यान करने के लिए होते हैं। किन्तु महलिाएं प्रायः अपनी चर्चा के लिए प्रसिद्ध होती है। और वे इसके लिए कोई भी स्थान का उपयोग कर लेती है। सास और बहु की चर्चा प्रायः धर्मस्थल पर होती है। महिलाओं की इस आदत की आलोचना होती है। संयुक्त परिवार की अवधारणा के औचित्य को इस कहानी में प्रोत्साहित किया गया है। कहानी के पात्रों का चरित्र चित्रण बहुत ही प्रेरक है एवं कथा वस्तु स्वाभाविक और बड़ी काल्पनिक है। भाषा सुबोध और प्रांजल है। सरल भाषा होने से कहानी प्रवाही बन गयी है। संस्कार सागर की कहानियों में रोचकता गहरी होती है। ऐसी कहानियाँ युवा वर्ग को आकर्षित करती है।**– अंकुर जैन, बड़ौदा (गुजरात)**

सम्पादक महोदय, विगत वर्ष नवम्बर माह में नोटबंदी के कारण आम जनता को परेशानी जरूर हुई परन्तु सबसे ज्यादा हमारे राजनेता परेशान नजर आये। शायद ही ऐसा कोई राजनेता हो जिसके पास काला धन न हो। जनता का पैसा धीरे-धीरे जनता को तो मिल ही जायेगा। भले ही इसमें कुछ असुविधा अवश्य हो लेकिन जिनके पास कालाधन है उन्हें पैसा वापिस मिलने वाला नहीं सो वे खूब हंगामा कर चुके हैं और हाय तौबा कर रहे हैं संसद के अंदर सांसदों ने हंगामा किया और बाहर दिल्ली के मुख्यमंत्री ने मुख्यमंत्री के पद पर बैठने के बाद अपने प्रचार में 1 साल मे 500 करोड़ कहाँ से लाये, इस हमाम में सब नंगे है। लेकिन इस अच्छे काम का चुनावी खामियाजा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को भुगतना पड़ेगा। **– अंशुल पाराशर, लटेरी**

सम्पादक महोदय, पिछले माह का संस्कार सागर दृष्टिगोचर हुआ आकर्षक आवरण सज्जा को देखकर मन विभोर हो गया। प्रकृति को कागज पर उतार आकर्षण पैदा करना सबके वश की बात नहीं है। हर वर्ग की इस पत्रिका के हर स्तम्भ प्रायः प्रासंगिक है और अनेक प्रकार से शिक्षाप्रद है। सम्पादकीय मौलिक और तथ्यपूर्ण होती है इसमें सच भी सलीके से कहा जाता है। पिछले माह में गरिमामय आचार्य पद शीर्षक से संस्कार प्रवाह पढ़ा लेख इतना गंभीर और चिंतनीय है कि पद की लोलुपता कम से कम साधु जीवन में तो नहीं होना चाहिए। एक संघ का आचार्य एक ही होना चाहिए, इसे ही अनुशासन की बुनियाद माना जायेगा, अन्यथा अनुशासन मात्र स्वप्न ही माना जायेगा **– डी.के.जैन, साबरमति (गुजरात)**

सम्पादक महोदय, व्रत की तरह नियमित है आपका सम्पादन-प्रकाशन कार्य। संस्कार सागर के अंक यही उद्घोषणा करते हैं। हर अंक को पढ़ने में आत्मानंद बढ़ता है, सो पूरा-पूरा समय देता हूँ। अनेक लेख ज्ञानवर्द्धन कर देते हैं। अतः आपको हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ। आपकी पूरी टीम श्रमसाध्य और विवेकसाध्य कार्य करने में निपुण ही नहीं, विशेषज्ञ है। ब्र. जयकुमार निशांत व ब्र. पं. सुदेश कोठिया की सूझबूझ पत्रिका में ऊर्जा प्रवाहित करती है। अतः सभी सम्पादकों और सलाहकारों का हार्दिक अभिनंदन। पत्रिका का 64 पृष्ठीय मेटर अत्यंत लोकोपयोगी है और सभी लेखक सराहना के पात्र हैं। खासतौर से एलकश्री सिद्धांतसागर जी की चर्चा आवश्यक है जिन्होंने अपने लघु में जैन न्याय का सरल परिचय प्रदान किया है। उन्हें इच्छामि नमन। **सुरेश जैन सरल, जबलपुर**

भक्ति तरंग

सब संकट मिट जावे

कहा री कहूं कछु कहत न आवै,
बाहूबल बल धीरज री ।।टेक।।

जल मल दिष्ट जुद्ध में जीत्यो,
भरत चक्र को बीरज री ।।कहा.1।।

जोग लियो तन फननि घर लियो,
शोभा जे अलि-नीरज री ।।कहा.2।।

द्यानत बहुत दान तब दै हौं,
पै हों चरनन की रज री ।।कहा..3।।

भगवान बाहुबली के धैर्य व बल के विषय में क्या कहूँ, कुछ कहते हुए नहीं बनता।

जल, मल्ल और दृष्टि युद्ध में जिसने भरत चक्रवीं के वीर्य को परास्त कर विजय प्राप्त की थी। फिर मुनि पद धारण किया तो साधनाकाल में सर्पो ने जिनके शरीर पर बांबियां बना लीं, वे कमल पर मंडराते भँवरे के समान शोभायमान हो रहे हैं।

द्यानतराय कहते हैं कि बहुत दान देने वाले को उनके चरणों की रज की प्राप्ति होती है अर्थात् उनके दर्शन का अवसर मिलता है। ■

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ससंघ सान्निध्य में पंचकल्याणक

सिलवानी। आचार्यश्री विद्यासागरजी के ससंघ सान्निध्य में दिनांक 13 से 18 जनवरी 2017 तक पंचकल्याणक सम्पन्न होगा। जिसमें माता-पिता श्री देवेन्द्र सिंघई, सौधर्म इन्द्र श्री अमितकुमार-श्वेता सिंघई, कुबेर इन्द्र मनीष-सुभ्रा सिंघई, महायज्ञनायक मनोजकुमार जैन गुड़वाला परिवार, भरत चक्रवर्ती अमित कुमार जैन भाईजी परिवार, बाहुबली राहुल (भूरा) गुड्डा जी जैन, राजा श्रेयांश श्री श्रेयांस जैन, राजा सोम सौरभ विनोद पटेल, सनत इन्द्र संतोष-कमलेश मैडम, माहेन्द्र इन्द्र अनिल बजाज, प्रथम यज्ञनायक कौशल सिंघई, द्वितीय यज्ञनायक अजित सेठ , तृतीय यज्ञनायक सुरेशजी मेडिकल, चतुर्थ यज्ञनायक अखिलेश बजाज, बनने का को सौभाग्य प्राप्त हुआ। ब्र. विनय भैया बंडा के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न होगा। ■

संस्कार प्रवाह

सर्वोपरि राष्ट्रहित

राष्ट्रीय हित सर्वोपरि होता है। राष्ट्रहित के लिए बलिदान और समर्पण आवश्यक होता है। जिस देश में आम आदमी खुद परेशान होकर राष्ट्रहित को हर प्रकार से महत्व देता है वह राष्ट्र कभी भी पराजित नहीं होता है न ही वह कभी गुलामी की जंजीरो में जकड़ सकता है। देश हमें सब कुछ देता है तो देशवासियों को भी देश के लिए कुछ न कुछ अवश्य देना पड़ेगा। इसी कर्त्तव्यभाव इसी त्याग भाव के परिणाम स्वरूप ही हमारे देश में प्रगति-समृद्धि और सुख शान्ति, अमन-चैन सम्भव होगा। राष्ट्रीय पर्व मनाने का उद्देश्य मात्र आयोजन नहीं होना चाहिए। अपितु बलिदान की परम्परा को याद करके हमें भी बलिदान देने देशहित में अपने स्वार्थ का त्याग करने के लिए तत्पर रहना चाहिए।

जब राष्ट्र आतंकवाद, भ्रष्टाचार, कालाधन रोकने में किसी भी तरह सफल नहीं हो पा रहा था तब प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक अपना -अपनी पार्टी का हिताहितदाँव पर लगाते हुये सुदर्शन चक्र छोड़ दिया। यह सुदर्शन चक्र था बड़े नोटो को बंद करके आतंकवाद की कमर तोड़ देने के लिये फलतः जम्मू कश्मीर में फिंकने वाले पत्थर अपने आप बंद हो गये। स्कूल खुल गये, कॉलेज चलने लगी और बाजारों में रौनक आ गयी। कश्मीर में अलगाववादी, आतंकवादी दुष्टता का अंत बड़े नोटो को बंद करके किया जाना, सचमुच में बहुत बड़ी उपलब्धि है। नक्सलवाद पर अपने आप नकेल डल गयी। सैकड़ो नक्सली आत्म समर्पण को विवश हो गये।

बेलगाम हो रही नकली काले धन की समस्या का समाधान अपने आप मिल गया। बड़े नोट बंद करने से भ्रष्टाचार की जमीं हुई जड़े

उखड़कर फिंक गई। नोटों के बल पर देशद्रोही और दुश्मन जोदेश की अर्थव्यवस्था चौपट कर रहे थे उनकी कब्र खुद गई, लेकिन आम आदमी के लिए जो परेशानी हुई। वह निश्चित ही पीड़ाजनक थी लेकिन हमारा भारत देश थोड़ी सी परेशानी सहकर आगे की सुकूनभरी हवाओं (लहर) की आशा में बैठा है। वह निश्चत तौर पर अच्छे दिन की कामना कर रहा है। जब किसी भी रोग का ऑपरेशन किया जाता है तो तकलीफ तो होना स्वाभाविक होता है। भारत देश का नागरिक त्याग में अपना विश्वास रखता है और समय पड़ने पर त्याग से पीछे नहीं हटता है।

राजनैतिक दलों के कुछ नेताओं ने जनता को अनावश्यक बरगलाया, लेकिन इसका एक दुखद पक्ष यह भी रहा कि विपक्षी राजनीति ने मोदी के इस कदम का भरसक विरोध किया। अड़गे लगाये यहां तक कि संसद नहीं चलने दी और अरविन्द केजरीवाल जैसों ने तो सारी सीमायें लांघ कर अपना राष्ट्र विरोधी परिचय दिया। राष्ट्रहित में उठाया गया बड़े नोट बन्द करने का कदम आज आम जनता को भा गया है और वह जनता यह समझ चुकी है कि राष्ट्र हित के लिए बलिदान आवश्यक होता है। आज की परेशानी कल का सुकून होता है। ■

आगामी आकर्षण

परम तपस्वी युग श्रेष्ठ-युग प्रभावक, युग दृष्टा, योग साहित्यमनीषी, करुणासागर परम पूज्य 108 आचार्यश्री विद्यासागर महाराज का 50 वां स्वर्ण संयमोत्सव (दीक्षा वर्ष) जून 2017 से जून 2018 तक पूरे भारत में विविध कार्यक्रमों सहित आयोजित किया जा रहा है। **संस्कार सागर मासिक हिन्दी पत्रिका** सम्पादक मंडल के निर्णयानुसार वर्ष भर प्रतिमाह संग्रहणीय विशिष्ट सामग्री सहित बहुरंगी आवरण में 20 स्तम्भों, लेख, कविता, विभिन्न आकर्षक प्रतियोगिताओं से भरपूर प्रकाशित होकर संस्कार सागर का अंक आपके सम्मुख होगा। अतः अभी से अपनी प्रति सुरक्षित करने हेतु पत्रिका के सदस्य बनें ताकि बाद में आपको असुविध ना हो। ■

डाक टिकटों का जैन इतिहास

भगवान महावीर की 2500 वीं निर्वाण जयंती एवं पावापुरी

• सुरेश जैन, लुधियाना •

वर्तमान चौबीसी के अंतिम तीर्थकर भगवान् महावीर का जन्म पिता राजा सिद्धार्थ के घर माता रानी त्रिशला की कोख से ईसा पूर्व 599 चैत्र शुक्ला त्रियोदशी को भारत की पावन धरती पर हुआ। इतने वर्षों बाद भी भगवान महावीर का नाम उसी श्रद्धा एवं भक्ति से स्मरण किया जाता है जिसका मूल कारण यह है कि महावीर ने इस जगत को न केवल मुक्ति का संदेश दिया अपितु मुक्ति का सरल तथा सच्चा मार्ग भी दिखाया। उन्होंने राजसी ठाठ एवं भोग विलास की दलदल में कमल के समान प्रारंभिक तीस वर्ष गुजारे, मध्य के 12 वर्ष 6 महिने 15 दिन घनघोर जंगल में मंगल साधना एवं आत्म जागृति की आराधना कर के केवलज्ञान प्राप्त किया तथा आयु के बाकी 29 वर्ष 5 महिने 15 दिन प्राणी मात्र के कल्याण एवं मुक्ति मार्ग की प्रशस्ति में व्यतीत किये। जनकल्याण हेतु उन्होंने चार तीर्थों साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका की व्यवस्था की। इस सर्वोदयी तीर्थ में क्षेत्र, काल, समय या जाति की सीमाएं नहीं थी। भगवान महावीर का आत्म धर्म जगत् की प्रत्येक आत्मा के लिए समान था। संसार में सभी आत्मा एक समान हैं, इसलिए हम दूसरों के प्रति वही विचार एवं व्यवहार रखें जो हमें स्वयं को पसंद हो। यही महावीर का **''जीयो और जीने दो''** का सिद्धांत है। उन्होंने आत्मिक और शाश्वत सुख प्राप्ति हेतु हमें पाँच सिद्धांत बताए- सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अचौर्य तथा ब्रह्मचर्य।

पावापुरी – पावापुरी जिस का प्राचीन नाम 'अपापापुरी' अर्थात (पापरहित) पुण्य भूमि है। यह क्षेत्र प्राचीन काल में मगध देश के अन्तर्गत एक शहर था। इस समय बिहार प्रदेश के जिला नालन्दा का एक गाँव है।

पावापुरी में भगवान् महावीर द्वारा धर्म संघ (तीर्थ) की स्थापना हुई थी। उस समय के बहुत ही श्रेष्ठ विद्वान 11 व्यक्तियों ने अपने शिष्यों सहित भगवान् महावीर के आगे दीक्षा ली थी वह 11 गणधर कहलाए थे। पावापुरी की पवित्र धरती पर भगवान ने अंतिम देशना दी थी और उसी पावन धरती पर ही भगवान् महावीर का निर्वाण कल्याणक हुआ था।

भगवान् महावीर की अंतिम देशना तथा निर्वाण - भगवान् महावीर ने अपने जीवन का 41 वां वर्षावास राजगृह में सम्पन्न किया

इसके पश्चात् राजा हस्तिपाल की भावभरी प्रार्थना स्वीकार कर अपापापुरी अर्थात् पावापुरी पधारे तथा राजा हस्तिपाल की रज्जुगशाला में ठहरे थे। पावापुरी में ही भगवान् ने अपने जीवन का 42 वां वर्षावास आरम्भ किया। चातुर्मास काल के तीन मास 14 दिन व्यतीत हो गये। अब भगवान् का निर्वाण समय निकट आया जानकर अंतिम देशना के लिए विशिष्ट समवसरण की रचना की गई। अगणित देवों के अतिरिक्त काशी कौशल के नौ लिच्छवी नौ पल्लवि आदि 18 गणराजा पौषध व्रत युक्त प्रभु की अंतिम धर्म देशना का श्रवण करने तथा हजारों की संख्या में श्रमण-श्रमणी, श्रावक-श्राविकाएं उनकी दिव्य देशना सुनने के लिए एकत्रित हुए। भगवान् दो उपवासों के साथ समवसरण में सुशोभित हो अपनी ज्ञानामृत वृष्टि से सोलह प्रहर तक निरन्तर धर्म देशना देते हुए श्री विपाक सूत्र के पुण्य फल के 55 अध्ययन तथा पाप फल के 55अध्ययन व श्री उत्तराध्ययन के समस्त 36 अध्ययन कहे। प्रभु धर्म-देशना का निरन्तर उद्योत करते हुए ईसा से 528 वर्ष पूर्व कार्तिक कृष्ण अमावस्या की रात्रि को नश्वर देह का त्याग कर सिद्ध बुद्ध व मुक्त हो गये। दिव्य ज्योति ज्ञानोद्योत विर्कीण कर सहसा विलीन हो गई। कार्तिक अमावस्या की सघन रात्रि में ज्ञान का वह दिव्य भास्कर निर्वाणोपलब्ध हो गया तत्क्षण देवगण व राजा आदि ने मणि-रत्नों का प्रकाश समस्त भूमण्डल को प्रकाशित कर दिया। प्रभु का निर्वाणोत्सव मनाया गया। सम्पूर्ण पावापुरी जगमगाने लगी। दीपावली का त्यौहार मनाने की प्रथा महावीर के निर्वाण दिवस के रूप में प्रारम्भ हुई।

पावापुरी जल मंदिर - जिस जगह भगवान् का निर्वाण हुआ वह चौरासी बीघे का समतल क्षेत्र था। भगवान् का निर्वाण होने पर उपस्थित जन समूह ने भक्ति भाव से विह्ल हो इस स्थान से धूल ले कर मस्तिक पर धारण की हर एक ने एक-एक चुटकी धूल ली, पर भीड़ इतनी अधिक थी कि एक-एक चुटकी थूल लेने से ही यहाँ सरोवर बन गया। इस सरोवर के मध्य में श्वेत संगमरमर का एक जैन मंदिर है जो जल मंदिर कहलाता है। अनुमानतः इस मंदिर का निर्माण भगवान् महावीर के निर्वाण के बाद उनके बड़े भाई राजा नन्दिवर्धन ने अंतिम देशना स्थल एवं अंतिम संस्कार स्थल पर चौंतरे बनवाकर प्रभु के चरण स्थापित कियेथे जो आज गाँव मंदिर व जल मंदिर माने जाते हैं। जल मंदिर में चरण पादुकाओं पर कोई लेख उत्कीर्ण नहीं है। समय-समय पर इस मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ। इस समय जो पूरा संगमरमर का मंदिर बना हुआ है उसे कोलकाता के सेठ पूनाचंद सेठिया जी ने सन् 1923 में बनवाया था। जो ठीक उसी स्थान पर बनाया गया है। जिस जगह पर भगवान् महावीर के बड़े भाई राजा नन्दीवर्धन ने मंदिर बनवाया था। जीर्णोद्धार के समय प्रकाश में आई बड़ी-बड़ी ईंटे़ इसके ढाई हजार वर्ष प्राचीन होने का प्रमाण देती है। मंदिर तक पहुँचने के लिए लाल पत्थर का

एक सुंदर पुल बना हुआ है। मंदिर के गर्भगृह में विराजमान तीन युगल चरण चिन्हों में मध्य में भगवान् महावीर के, बाई ओर गौतम स्वामी के व दांई ओर सुधर्मास्वामी के हैं। गर्भगृह के बाहर चारों ओर बरामदा है। मंदिर के नीचे एक सुंदर सरोवर है जो कि इस समय मात्र दो दो फर्लांग लम्बा व लगभग इतना ही चौड़ा रह गया है। जब सरोवर कमल के फूलों से भरा हुआ होता है। तब अत्यंत सुन्दर दृश्य दिखाई देता है।

पावापुरी जल मंदिर पर डाक टिकट- भगवान् महावीर की 2500 वी निर्वाण जयंती पर भारत सरकार के डाक विभाग ने एक स्मारक डाक टिकट 13.11.1974 को पावापुरी जल मंदिर के जलचित्र वाली नील कृष्ण रंग में जारी की थी। 25 पैसे मूल्य वाली इस डाक टिकट को 30 लाख संख्या में बिना जल चिन्ह वाले कागज पर फोटोग्राफर मुद्रण प्रक्रिया से भारत प्रतिभूति मुद्रणालय में छापा गया। इसका डिजाईन श्री विनय सरकार ने बनाया। इस डाक टिकट का विवरण न्यूयार्क अमेरिका में छपने वाले Scott Catalouge में नम्बर 640 पर तथा लंडन इंग्लैण्ड से छपने वाले Stanley Gibbons Catalouge में S.G. No. 622 पर दिया गया है। टिकट का डिजाइन - डाक टिकट के बांई ओर पावापुरी जल मंदिर का चित्र है, दांई ओर 25 पैसे मूल्य लिखा है। नीचे भारत तथा इंडिया लिखा है सबसे नीचे दो लाईनों में इस प्रकार लिखा है। भगवान् महावीर की 2500 वां निर्वाण जयंती Bhagwan Mahavira 2500th Nirvana Anniversary.

भगवान महावीर पर डाक टिकट (विदेश)- Hamboldt University - Berlin ने मई से 30 मई 1979 तक International Association of Sanskrit Studies (IASS) के तत्वावधान में चतुर्थ विश्व संस्कृत सम्मेलन आयोजित किया था। यह सम्मेलन जर्मन डेमोक्रेटिक रिपब्लिक के WEIMAR शहर में आयोजित किया गया था। भारतवर्ष के बाहर होने वाला यह संस्कृत का सबसे बड़ा सम्मेलन था। इस अवसरपर G.D.R. ने भारत के चार लघु चित्रों (Miniature Paintings) पर डाक टिकटें जारी की थी। उसमें एक बहुरंगी डाक टिकट जिसका मूल्य 35 है उस पर भगवान् महावीर का बहुत सुंदर चित्र छपा है। यह अनुमानित 15 वीं/16 वी शताब्दी के लघु चित्र से लिया गया है। यह पहली डाक टिकट है जो जैन तीर्थंकर पर विदेश में जारी की गई हैं। इस डाक टिकट का परिचय Stanley Gibbons Catalogue में East Germany के अन्तर्गत E-2129 पर दिया गया है। ■

तीन संतो का मिलन, हर्षित हुआ समाज

इन्दौर।आचार्यश्री उदारसागरजी महाराज ससंघ, आचार्य श्री पुष्पदंत सागर महाराज एवं उपाध्याय श्री निर्भयसागरजी महाराज ससंघ का मंगलमय मिलन दिनांक 25 नवम्बर 2016 को श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर में हुआ।

औषधीय गुणों से हरा-भरा धनिया

संयम स्वास्थ्य योग

घर में कोई भी पौधे लगे हों, खास तौर पर हर्ब्स, तो ये हमें सेहतमंद व खूबसूरत तो बनाते ही हैं साथ ही इनकी खुशबू से घर भी महकता रहता है। हरा धनिया भी इन्हीं में से एक है। जब चाहें हर रोज फ्रेश हरे धनिया से गार्डिशिंग कर ली या हरा धनिया तोड़कर इसकी चटनी बना सकते हैं । आप सोचेंगे कि हमारे घर में तो गार्डिनिंग के लिए जगह ही नहीं है तो निराश न हो क्योंकि आप अपने घर की बालकनी या छोटी सी किसी खाली जगह पर हर्ब्स उगा सकती है। यह ऐसे हर्ब्स है जो आसानी से थोड़ी जगह में भी उगाएं जा सकते हैं और जो हैल्थ के साथ-साथ हमारी खूबसूरती में चार चांद लगाते हैं। हरा धनिया- मिट्टी में धनिए के बीज बोने के बाद 10 से 12 दिन में ही नर्म पत्ते निकलने शुरु हो जाते हैं । इस पौधे के लिए धूप जरूरी होती है इसमें विटामिन सी कोलेस्ट्राल लेवल को कम करता है और आयरन एनीमिया जैसी बीमारी के लिए लाभकारी होते हैं । हरे धनिए के पत्ते चबाने से मुंह के छाले ठीक होते हैं । छाछ में हरे धनिए के पत्ते व भुना जीरा मिलाकर पीने से शरीर की गर्मी खत्म होती है और लू से बचाव होता है। हरे धनिए का रस पिंपल्स और ब्लेक हैड्स दूर करता हैं। बाल झड़ने पर हरे धनिए का रस नारियल तेल में मिलाकर लगाए मस्से निकलने लगें तो एक महीने तक उन पर दिन में दो बार ताजा धनिए का रस लगाएं । हरे धनिए में मौजूद विटामिन सी कोलैस्ट्रॉल लेवल को कम करने में मदद करता है । हरे धनिए का सेवन करने से एनीमिया जैसी बीमारी से भी राहत मिलती हैं। ■

आर्यिका विदुषी श्री का पिच्छिका परिवर्तन प्रभावना पूर्वक सम्पन्न

ललितपुर। राष्ट्रसंत विरागसागर महाराज की प्रभावी शिष्या श्रमणी आर्यिकारत्न विदुषीश्री माता जी का पिच्छिका परिवर्तन संयमोत्सव पर्व के रूप में मनाया गया। पिच्छिका परिवर्तन में 140 श्रावकों ने व्रत संयम लेकर नवीन पिच्छिका आर्यिक संघ को प्रदान की जबकि पुरानी पिच्छिका विदुषिश्री की कमला-कपूरचंद लागौन आर्यिका विभूति श्री की मनोरमा अरविंद जैन आप्टीकल, आर्यिका विनीत श्री की रेखा-अनिल जैन भोपाल, आर्यिका विकम्पाश्री की सरोज-राजकुमा र कुम्हैण्डी, आर्यिका विरक्त श्री की कांति महेन्द्र जैन साढूमल आर्यिका विनोद श्री की मिथला-सुरेशचंद जैन, क्षुल्लिका विप्रदा श्री की चन्द्रप्रभा सुनील जैन मिली स्टोर, क्षुल्लिका विश्वशान्ता श्री की सरोज प्रेमचंद जैन गुरसराय एवं क्षुल्लिका विलोचनाश्री की अनीता जैन सैदपुर को नमो लोए सव्वसाहूणम की भावना के साथ प्राप्त हुई। ■

क्या यह सही में नया-वर्ष है ?

• श्री सुरेश जैन 'सरल' •

नूतन वर्ष की हार्दिक शुभकामनायें इस आशय के वाक्य वर्ष में अनेक बार सुनने क मिल जाते हैं। तब ध्यान आया कि हमारे देश में मुख्य रूप से वर्ष में छःबार नया वर्ष मानते हैं।जब ईसाई भाई मिलते हैं तो वे 1 जनवरी से नया वर्ष मानते हैं जब मुस्लिम भाई मिलते हैं तो वे अपने हिजरी संवत् के अनुसार हिन्दू भाई विक्रम संवत् के अनुसार, जैन भाई वीर निर्वाण सम्वत् के अनसुार, बंगाली भाई बंगला-संवत् के अनुसार तो हिन्दु भाई शक्- संवत् के अनुसार बधाईयां देते हैं । इसी क्रम में महाराष्ट्र और दक्षिण भारत के भी पृथक-पृथक वर्ष हो सकते हैं । यह सब विविधता में एकता की मिसाल है।

नया वर्ष जिसका भी हो, मैं तो यही कहूँगा कि नववर्ष पर मात्र बधाई देकर नहीं रूक जाना है। कुछ विचार करना है कभी आपने खुद को बधाई दी है ? नहीं दी। इस वर्ष यह भी प्रारंभ करे और एक बधाई खुद को भी दें। क्या तरीका हो सकता है ? सोचें ? नूतन वर्ष पर अपने खुद को बधाई देने का क्या ढंग हो ?

पहला यह कि किसी सात्विक-भोजन शाला में जाकर सपरिवार भोजन ग्रहण करें। दूसरा -वृद्ध माता-पिता को नया चश्मा खरीद कर दें।तीसरा-बच्चों को एक जैसे मूल्य की भेंट दे। चौथा- नगर केपास स्थित वृद्धाश्रम में जाकर एक-दो घंटे वृद्धों के पास बैठें, उनकी टहल करें। पांचवा-अंध-मूक छात्र-छात्राओं के आश्रम जाकर उन्हें साबुन , कंघी, तेल, तौलियां भेंट करे।

यदि आप धार्मिक स्वभाव के हैं तो प्रथम दिवस ही मंदिर जी में एक लघु विधान करें। अधिक धार्मिक हैं तो पास या दूर के तीर्थ क्षेत्र पर जाकर स्वाध्याय करें, पिकनिक नहीं । या अपने मन पसंद ग्रंथ की 10-20 प्रतियां उपयुक्त हाथों तक पहुँचाएं।

यदि आप सामाजिक हैं तो परिवार और मित्रों के साथ, पास के दर्शनीय स्थल को जावें, घूमें, फिरें, बोले-बतलावें । यदि अंतर्मुखी है तो एक प्रिय पुस्तक का आद्योपान्त पठन करें। यह आशय है कि मन को अच्छा लगने वाला एक कार्य अवश्यक करें। समय हो और दो चार मित्र साथ हो तो नगर के अ स्पताल में भर्ती मरीजों से मिलें, उन्हें पत्र-पत्रिकाएं भेंट करें, हालचाल पूछें और शुभकामनाएं दे।

अनेक कार्य हैं, जिन्हें आप स-गौरव सम्पन्न कर सकते हैं। कुछ युवक नूतन वर्ष पर रक्तदान करते हैं । कुछ महिलाएं नगर से दूर स्थित, किसी नगर में साधु समूह के लिए

चौका लगा सकती हैं । सोचें तो बहुत कुछ कर सकते हैं। हमारे बीच में कुछ भाई गलत तरीके से भी नया वर्ष मनाते हैं । एक दिन में दो फिल्में देखते हैं या ढाबा जैसे स्थानों पर जाकर खाना खाते हैं या कमरे में घुस कर पत्ते (प्लेइंग कार्ड) खेलते हैं या रजाई तान कर 4-6 घंटों तक सोते रहते हैं।ये असभ्य लोगों के तरीके हैं , इनसे बचना चाहिए।

तो पुनः नये वर्ष के अनेक अभिनंदन देते हुए लेख समाप्त कर रहा हूँ कि व्यक्ति जिस समुदाय का हो, वह उस समुदाय के अनुसार नय वर्ष मनाये, अन्य समुदाय के नये वर्ष का भी ध्यान रखे और अपने शब्दों का अमृत हर कहीं, समय पर, अवश्य ही सिंचित करें। खुश रहे। दूसरे भी खुश रहें-यह ध्यान रखें और नये वर्ष पर किसी पर क्रोध न करे। आदतन कर ही दे तो शीघ्रता से क्षमा-याचना कर ले। अपने नये वर्ष का गौरव बढ़ाए। तब आपको लगेगा कि आपने खुद को भी बधाई दी है। ■

पता-ए-मुकाम

पल पल में ये हवा
जैसे मुझे छू सी रही थी।
आँखों में आंसू थे
लेकिन हर किरण जैसे
मुझे ढूंढ सी रही थी।
राहें गुमनाम थीं,
पता किसको मालूम थखा।
चल पड़ी राह पर
अपनी मंजिल का पता पूछने
तब लोगों ने कहा
खुद को ढूँढ लोगे तो
मंजिल मिल जायेगी
अगर रो-रोकर जियोगे तो
खुशियाँ हाथ से निकल जायेगी
भले ही मंजिल
कितनी भी दूर हो....
तुम राहो पर चलते चलो
वो तुम्हें जरूर मिल जायेगी
वो तुम्हें जरूर मिल जायेगी।

• अपूर्वा अमित जैन, झाँसी • ■

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभनाथ

• राजेश जे. वत्सल एडवोकेट •

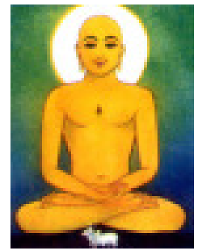

भारतीय धर्मों में तीन धर्म प्रधान है - वैदिक धर्म, जैन धर्म, बौद्ध धर्म। जैन धर्म के अनुसार कर्मभूमि काल के आद्य तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव थे। हिन्दू पुराण भी इसके समर्थक हैं। नाभि पुत्र ऋषभ और ऋषभ पुत्र भरत की चर्चा प्रायः सभी हिन्दु पुराणों में आती है।

मार्कण्डेय पु.अ. 90, कूर्म पु.अ. 41,, आ. पु.अ. 10, वायु पुराण अ. 33, गरुड़ पु.अ. 1, ब्राह्माण्ड पु.अ. 14, वाराह पु.अ. 74, लिंग पु.अ. 47, विष्णु पुराण र.अ. 1 और स्कन्द पु. कुमार खण्ड अ. 37, में ऋषभदेव का वर्णन आता है। इन सभी में ऋषभ को नाभि और मरूदेवी का पुत्र कहा है। ऋषभ से सौ पुत्र उत्पन्न हुए। उनमें से बड़े पुत्र भरत को राज्य देकर ऋषभ ने प्रव्रज्या ग्रहण की । इसी भरत से इस देश का नाम भारत वर्ष पड़ा । यथा-

नाभ स्त्वजनयत् पुत्रं मरुदेव्यां महाद्युतिः।
ऋषभं पार्थिवं श्रेष्ठं सर्वक्षत्रस्य पूर्वजम्ः।।
ऋषभाद् भरतो जज्ञे वीरःपुत्रशतोऽग्रजः।
सोऽभिषिच्यर्षभः पुत्रं महाप्राव्राज्यमास्थितः।।
हिमाह्वं दक्षिण वर्ष तस्य नाम्ना विदुर्बुधाः ।

उक्त श्लोक थोड़े शब्द भेद के साथ प्रायः उक्त सभी पुराणों में पाये जाते हैं । श्रीमद् भागवत् में तो ऋषभावतार का पूरा वर्णन है और उन्हीं के उपदेश से जैनधर्म की उत्पत्ति बतलाई है यथा -

बर्हिषि तस्मिन्नेव विष्णुदत्त भगवान्
परमर्षिभिः प्रसादितो नाभेः
प्रियचिकीर्षया तदवरोधावने मरुदेव्यां
धर्मान् दर्शायतुकामो
वातरशनानां श्रमणानामृषीणामूर्ध्वमन्धिनां
शुक्लया तनुवावततार 20 स्क. 5, अ.93

भारत के पूर्व राष्ट्रपति प्रसिद्ध दार्शनिक स्व. राधाकृष्णन ने अपने भारतीय दर्शन के इतिहास (जि.1,पृ. 187) में लिखा है जैन परम्परा ऋषभदेव से अपनी उत्पत्ति का कथन करती है जो बहुत शताब्दियों पूर्व हुये हैं। इस बात के प्रमाण पाये जाते हैं कि ईस्वी पूर्व प्रथम शताब्दी में प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव की पूजा होती थी। इसमें कोई संदेह नहीं है कि जैन धर्म वर्धमान और पार्श्वनाथ से भी काफी पहले प्रचलित था । यजुर्वेद में ऋषभदेव, अजितनाथ और अरिष्टनेमि इन तीर्थंकरों के नाम आते हैं। भागवत पुराण भी इस बात का समर्थन करता है कि ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक थे।

भागवताचार्य ने ऋषभदेव जी का जो वर्णन किया है वह जैन मान्यता से भी अविरुद्ध है। वह ग्रन्थ है उनका ग्रन्थ कर्म सिद्धांत रूप था। जैन धर्म में कर्म सिद्धांत रूप ग्रंथ को मानना का पाया है। ऋषभदेव से [illegible]

डॉ. श्री रामप्रसाद चन्दा के अनुसार मोहन-जोदड़ो से प्राप्त पत्थर की मूर्ति योगी की मूर्ति है। उन्होंने मॉडर्न रिव्यू सन् 1932 में एक लेख प्रकाशित कराया था। उसमें उन्होंने [illegible] से प्राप्त मुद्रा का चित्र करके दिखाया है - सिंधु घाटी से प्राप्त मुहरों पर खड़ी अवस्था में अंकित देवताओं की मूर्तियां ही योग की मुद्रा में नहीं हैं अपितु खड़ी अवस्था में अंकित मूर्तियां भी योग की कायोत्सर्ग मुद्रा को बतलाती है। मथुरा संग्रहालय में ऐसी [illegible] की कायोत्सर्ग में स्थित ऋषभदेव जिन की मूर्ति है। इस मूर्ति की शैली से सिन्धु से प्राप्त मुहरों पर अंकित खड़ी हुई देवमूर्तियों की शैली बिल्कुल मिलती है। ऋषभ या वृषभ का अर्थ होता है नंदी (बैल) और ऋषभदेव भगवान का चिह्न नंदी (बैल) मोहर नं. 3 से 5 तक के ऊपर अंकित देवमूर्तियों के साथ नंदी (बैल) भी अंकित है, जो ऋषभदेव का ही रूप हो सकता है।

मोहनजोदड़ो की [illegible] मूर्तियां भी मिली है। जिनमें से एक शिव की मूर्ति मानी गई है और इसको भारत सरकार के [illegible] विभाग के पुरातत्व सर्वेक्ष-

[illegible] श्री डी. एस. राधाकृष्णन ऋषभ पूजक को मूर्ति मानते हैं। ऋग्वेद (2-33-15) में एक ऋचा है - 'एव बभ्रो वृषभ चेकितान यथा देव न हृणीषे न हंसि'। हे वृषभ! ऐसी कृपा करो कि हम कभी नष्ट न हों। [illegible] (14-25) और ब्रह्माण्ड पुराण (5,2-5-17) में ऋषभ का वर्णन किया है।

भगवान ऋषभदेव की दो पत्नियाँ थी। एक का नाम सुनन्दा था और दूसरी का नाम नन्दा (यशस्वती) था। इनसे उनके सौ पुत्र और दो पुत्रियाँ हुईं। बड़े का नाम भरत था। इन्हीं भरत इस युग में भारत वर्ष के प्रथम चक्रवर्ती हुए और उन्हीं के नाम से इस देश का नाम भारत पड़ा। एक दिन भगवान ऋषभदेव राज सिंहासन पर विराजमान थे। सभा लगी हुई थी अचानक नृत्य करते-करते नीलांजना का देहावसान हुआ। इस घटना से भगवान का मन विरक्त हो उठा। [illegible] सब पुत्रों को राज्य सौंप कर उन्होंने दीक्षा ले ली और 6 माह की समाधि लगा कर बैठ गए। उनके साथ और भी अनेक राजाओं ने दीक्षा ली। किन्तु वे भूख-प्यास के कष्ट सहन नहीं करने से भ्रष्ट हो गए। छह माह के बाद भगवान की समाधि भंग हुई तो उन्होंने आहार के लिए विहार किया। विहार करते-करते वे हस्तिनापुर पहुँचे। वहाँ के राजा श्रेयांस ने उन्हें इक्षु रस का आहार कराया। भगवान का यह आहार [illegible] अक्षय तृतीया के दिन हुआ था। पुरिमताल नगर के उद्यान में उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति हुई और उनका समवसरण लगा। अन्त में [illegible]

[illegible] में उन्होंने कहा कि मैं [illegible] पूजक हूँ। [illegible] समवसरण में भी [illegible] वर्तमान में है कि उनमें से कोई पूजक होने वाला है? भगवान ने कहा कि भरत का पुत्र [illegible] पूजक होगा। इस तरह भारत में [illegible] पूजक हैं - प्रथम भगवान ऋषभदेव और अंतिम भगवान महावीर। उनके समस्त देश में महावीर जयन्ती मनाई जाती है किन्तु ऋषभ जयंती एवं उनका निर्वाणोत्सव भी मनाना चाहिए। [illegible] से भगवान ऋषभदेव की [illegible] होना चाहिए। ■

समता भाव से रहना चाहिए

मोक्ष लक्ष्य को साधते जाएं, राग द्वेष मोह छोड़ते जाएं।
[illegible] काम छोड़ते जाएं, समता भाव से रहते जाएं॥
ऐसा कुछ भी दान करते जाएं, दान कुछ ध्यान करते जाएं।
स्वाध्याय-मनन करते जाएं, [illegible] अपनाते जाएं ॥1॥

क्रोध मान माया छोड़ते जाएं, ईर्ष्या द्वेष घृणा छोड़ते जाएं।
कलह-निन्दा को छोड़ते जाएं, [illegible] को छोड़ते जाएं॥
[illegible] से निर्लिप्त जाएं, [illegible] छोड़ते जाएं।
आत्म-चिन्तन करते जाएं, [illegible] रहते जाएं ॥2॥

आत्मचिन्तन कुछ न करते जाएं, [illegible] न करते जाएं।
ऐसा कुछ [illegible] न करते जाएं, ऐसा कुछ [illegible] न करते जाएं॥
[illegible]
[illegible] ॥3॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]
आज [illegible] ॥4॥

[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥5॥
आत्मा को परमात्मा बनाते जाएं, ऐसा कुछ ही हम काम करते जाएं।
परम पावन गुरु [illegible] हमारे, [illegible] गुरु सान्निध्य [illegible] जाएं।

• आचार्य ज्ञानसागर •

सफल जीवन के लिये विश्वास से भरा मन जरूरी

• ललित गर्ग •

हम जीवन खुशनुमा तभी बना सकते हैं जब हमारा जिन्दगी के प्रति सकारात्मक नजरिया होता है । हर व्यक्ति की यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है कि वह अपने जीवन में सफलता की उच्चतम ऊँचाइयाँ को छूना चाहता है। उसकी यह नैसर्गिक आकांक्षा होती है कि उसे मनचाही वस्तु मिले, मनचाहा पद मिले, मनचाहा जीवन साथी मिले, मनचाहा मान-सम्मान प्राप्त हो, मनचाही गाड़ी, बंगला कोठी, कार का सुख मिले इत्यादि। किन्तु ऐसा सौभाग्यशाली व्यक्ति कोई बिरला ही होता है जिसकी अधिकांश कामनाओं की पूर्ति संभव हो जाए। पर मेरी दृष्टि में वह व्यक्ति ज्यादा सौभाग्यशाली है जो इन सब चीजों के न होने पर भी जीवन के प्रति धन्यता का भाव लिये होता है। हमारी दृष्टि लेने या भोगने से ज्यादा देने या त्यागने में होनी चाहिए । देने का सुख सचमुच अद्‌भुत होता है। किसी के लिये कुछ करके जो संतोष मिलता है उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। फिर वह कड़कती ठंड में किसी गरीब को एक प्याली चाय देना ही क्यों न हों और इसके साथ में जो मिला बहुत मिला-शक्रिया के भाव हो तो जिन्दगी बड़े सुकून तरीके से सफल और सार्थक की जा सकती है। लेकिन ऐसा होता नही है, किसी-न-किसी वजह से हमें नकारात्मकता घेरे रहती है।

अगर सोचा जाए तो महत्वपूर्ण यह नहीं होता कि हमारे पास पीड़ाएँ, असफलताएं, दर्द और निराशाएं कितनी हैं, जरूरी यह होताहै कि आप उस दर्द,पीड़ा, असफलता के साथ किस तरह खुश रह पाते हैं । इसलिए जो कुछ मिला है या जो कुछ बचा है, उसे गले लगाएं बजाय असफलता या दर्द का गम मनाने के। जीवन में कई ऐसी घटनाएं होती हैं जिन पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं होता । हालांकि हमारे पास विकल्प जरूर होता है -हम समय और घटनाओं को सहते हुए आगे बढ़ते रहे या फिर हार मान जाये। परिवेश बदलने से सब कुछ बदलजाएगा-यह सोच अधूरापन है। जड़ की बात पर भी हमें जाना होगा,मूल तक जाना होगा। बाधक तत्वों का भी विचार करना होगा कि जीवन में बाधक तत्व कौन से हैं ?

जहां भी विश्वास बुझता है, सम्पूर्ण रचनात्मक शक्तियां धुंधली सी हो जाती हैं। विश्वास से भरा मन परिस्थिति के अनुकूल

स्वयं ढलता नहीं बल्कि उन्हें अपने अनुसार ढाल लेता है। एक युवा इंटरव्यू देने के लिए जाते समय यदि पूरे निश्चय और विश्वास से भरा होता है तो नौकरी निश्चित है, क्योंकि निरीक्षक को यूं भी लगा है जैसे यही वह व्यक्ति है जिसकी हमें प्रतीक्षा है। विश्वास के अभाव में सफलताएं संभव नहीं, क्योंकि लड़ाई में युद्ध होने से पहले ही हथियार डाल देने वाला सिपाही कभी विजयी नहीं बनता। कार्य प्रारंभ होने से पहले ही यदि मन संदेह, भय, आशंका से भर जाए तो यह बुजदिली है। जरूरत सिर्फ अहसास की है। एक बार पूरे आत्मविश्वास के साथ स्विच दबा दें , पूरा जीवन रोशनी से भर जाएगा।

सफलता का महत्वपूर्ण सूत्र है। साहसी मन का होना। मन यदि बुझा-बुझा सा है तो शरीर कभी सक्रिय नहीं बन सकता। मन में स्वयं के प्रति विश्वास होना जरूरी है कि मुझे अनंत शक्ति का संचय है । मैं भी वो सब कुछ कर सकता हूँ जो दूसरे लोग करते हैं। अपने कदमों पर खड़े होने का साहस भी जिनमें न हो तो भला ऐसे लोग क्या कर पायेंगे अपनी जिंदगी में ? इसीलिए महावीर ने उपदेश दिया- पराक्रमी बनो।

अपने लिए आप खुद जिम्मेदार हैं। सफल हैं या असफल, खुश हैं या नाखुश। जो करना है, आपको ही करना है। अपने हालात के लिए दूसरों को जिम्मेदार ठहराने का कोई मतलब नहीं होता। हर कोई अपने सुख-दुख अपने ढंग से जी रहा है। ओशो के अनुसार, यहां कोई भी आपका सपना पूरा करने के लिए नही हैं । हर कोई अपनी तकदीर बनाने में लगा है।

अक्सर हमारे अंदर अनजाने ही यह धारणा बन जाती है कि यदि हमें इच्छित नहीं मिला तो हम सुखी नहीं रह पायेंगे। यह धारणा निराधार है । कई बार वर्तमान में हमें जो असफलता या विपत्ति दिखाई पड़ती है, वही हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित होती है, जिसकी हमने कभी कल्पना भी नहीं की थी । सफलता और संघर्ष साथ-साथ चलते हैं। चुनौतियां केवल बुलंदियों को छूने की नहीं होती, खुद को वहां बनाए रखने की भी होती है । ठीक है कि एक काम करते-करते हम उसमें कुशल हो जाते हैं । उसे करना आसान हो जाता है। पर वही कररते रह जाना,हमें अपने ही बनाए सुविधा के घेरे में कैद कर लेता है। रोम के महान दार्शनिक सेनेका कहते हैं - कठिन रास्ते भी हमें ऊँचाइयों तक ले जाते हैं। इसलिये कठिन रास्ते से घबराना नहीं चाहिए, बल्कि उन्हें आगे होकर स्वीकारना चाहिए।

कुछ भी हो सकता है और कुछ भी गलत ही होगा। इन दोनों में अंतर है। एक में उम्मीद है कि जब कुछ तय नहीं है तो फिर सपने देखने और योजना बनाने का क्या अर्थ है ? फिलेडेल्फिया की टैंपल यूनिवर्सिटी में गणित के प्रोफेसर जॉन एलेन पाउलोज कहते हैं

आध्यात्मिक वैज्ञानिक धर्म से ही सर्वोदय संभव

• वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनन्दी जी •

[illegible]

1. सत्यनिष्ठ भाव-वचन व्यवहार

[illegible]

रिवाज, नीति आदि जन्म लेती है या जिस संस्कृति से लेकर नीति आदि में सत्यनिष्ठ भाव-वचन-व्यवहार होते हैं वे ही सच्ची है, इससे विपरीत झूठी है।

2. समतापूर्ण भाव-वचन-व्यवहार-

सत्यनिष्ठ भाव-वचन-व्यवहार के अंतर्गत समतापूर्ण भाव-वचन-व्यवहार- होते हैं। प्रकारान्तर से दोनों में कार्य-कारण सम्बन्ध या सिक्के के दो पहलू हैं। जिस प्रकार जितने-जितने अंश में प्रकाश होता है उतने उतने अंश में अन्धेरा काम होता है या जितने-जितने अंश में अन्धेरा कम होता है उतने-उतने अंश में प्रकाश प्रकट होता है, उसी प्रकार सत्यनिष्ठ भाव-वचन-व्यवहार तथा समतापूर्ण भाव-वचन-व्यवहार में जानना चाहिए।

चोर, डाकू, लुटेरे, डकैत, ठग, आतंकवादी, पंथ-मत-परम्परावादी, राजनीतिक दल आदि में अपने-अपने संकीर्ण स्वार्थनिष्ठ, नियम-कानून व्यवस्था, लेन-देन, वचन-व्यवहारादि होते हैं, जिसमें उन्हें लाभ पहुंचे, उनकी व्यवस्था चले,परस्पर में सहयोग-समन्वय आदि हो परन्तु उनके नियम-कानून आदि से दूसरों को क्षति पहुँचने के कारण उसके नियमादि न सत्यनिष्ठ-समतापूर्ण, वचन-व्यवहारादि हैं । उसी प्रकार जिस धर्म (पंथ,मत, परम्परादि) के नियम, वचन, व्यवहारादि दूसरों को क्षति पहुँचाते हैं वह धर्म **'आध्यात्मिक-वैज्ञानिक धर्म'** नहीं हो सकता है। इस दृष्टि से वर्तमान में प्रचलित धर्म (पंथ, मतादि) वस्तुतः **'आध्यात्मिक-वैज्ञानिक धर्म'** नहीं हैं है भले बाह्यतः उस पंथादि को मानने वाला कोई कोई अन्तरङ्ग से 'आध्यात्मिक-वैज्ञानिक धर्म' को मानने वाले हो सकते हैं परन्तु सामुदायिक रूप से कोई भी मत में सब कोई **'आध्यात्मिक-वैज्ञानिक धर्मावलम्बी'** नहीं हैं क्योंकि सामुदायिक रूप से सब में उपर्युक्त आध्यात्मिक वैज्ञानिक धर्म के गुण-धर्म नहीं पाये जाते हैं। अर्थात् भीड़ में सत्य नहीं होता है,सत्य को तो जाना जाता है, माना जाता है, तथा आचरण के द्वारा प्राप्त किया जाता है। अतः कभी भी भीड़ का अन्धानुकरण करने वाला आध्यात्मिक-वैज्ञानिक धर्मावलम्बी नहीं ब़न सकता है, क्योंकि इसे तो स्व-पुरूषार्थ से प्राप्त किया जाता है न कि परम्परा रूप से या धरोहर से अथवा वंशानुगत से प्राप्त होता है। इसका कारण है कि **'आध्यात्मिक-वैज्ञानिक धर्म'** अमूर्तिक, स्व-पुरूषार्थ से उत्पन्न होने वाला होने से इसे परम्परा, धरोहर वंशानुगत रूप से बालात् धर्म परिवर्तन से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इतना ही नहीं लोक-तन्त्रात्मक पद्धति से, बहुमत से भी कोई ऐसा धार्मिक नहीं बन सकता है।

3) स्व-पर शान्तिप्रद भाव-वचन-व्यवहार

उपर्युक्त गुण-धर्म-विशेषताओं से युक्त भाव-वचन-व्यवहार से स्व-पर को शान्ति प्राप्त होती है। अर्थात् जिससे स्व-पर (स्व से लेकर विश्व) को शान्ति मिलती है वह 'आध्यात्मिक-वैज्ञानिक धर्म'। अर्थात् 1. सत्यनिष्ठ भाव-वचन-व्यवहार। 2. समतापूर्ण-भाव-वचन-व्यवहार। 3. स्व-पर शान्ति प्रद भाव-वचन-व्यवहार रूपी आयाम एक त्रिभुज के तीन भुज तथा तीन

कोण के समान है। अर्थात् कोई भी एक भुज के अभाव से या कोई एक कोण के अभाव से भी जिस प्रकार त्रिभुज नहीं बन सकता है उसी प्रकार उपर्युक्त तीनों आयाम या कोण के अभाव से आध्यात्मिक-वैज्ञानिक धर्म' नहीं बन सकता है। अथवा 111 (एक सौ ग्यारह)के लिए तीनों एक के सम्यक् समन्वय चाहिए। अन्यथा एक के भी बिना 111 बन ही नहीं सकता है। उसी प्रकार आध्यात्मिक वैज्ञानिक धर्म के बारे में जान लेना चाहिए।

प्रकारन्तर से कहने पर (1) आयाम बीज है तो (2) आयाम वृक्ष है और (3) आयाम फल है। सत्य रूपी बीज से समता रूपी वृक्ष का फल है शान्ति। अर्थात् शान्ति चाहिए तो समता तथा सत्य को अपनाना केवल आवश्यक ही नहीं है परन्तु अनिवार्य भी है।

आकाश जिस प्रकार अखण्ड, सर्वव्यापीर अनन्त है उसी प्रकार परम यथार्थ सत्य भी है। यह सत्य कोई अपना पराया रूप से अलग-अलग नहीं होता है। कष्ट यथा हमें प्रिय नहीं हैं उसी प्रकार दूसरों को भी प्रिय नहीं है। इसलिए सबके प्रति समानता विधेय है। इससे जायमान शान्ति सबके लिए इष्ट है

कुछ लोग वैभव, विकास के लिए तो कुछ लोग शान्ति (सुख) के लिए असत्य, वैषम्य, हिंसा, अन्याय, पाप अपनाते हैं, तो कुछ धर्म के नाम पर इसे अपनाते हैं। यह सब कार्य उसी प्रकार विपरीत है जैसा कि जड़ से चैतन्य तत्व, अमूर्तिक आकाश को पिघलाकर पानी प्राप्त करना जैसा है। जिस प्रकार आधुनिक विज्ञान प्रयोग-प्रधान है। उसी प्रकार आध्यात्मिक-धर्म' रूप से अभिहित किया है, न कि भौतिक विज्ञान से युक्त धर्म को 'आध्यात्मिक-वैज्ञानिक धर्म' माना है। आधुनिक विज्ञान तो भौतिक स्थूल पदार्थ जो कि इन्द्रिय, यंत्र से परीक्षित है उसे ही मानता है। इसलिए यह विज्ञान भी भौतिक रूप से पूर्ण सत्य नहीं हैं तो अमूर्तिक आध्यात्किम विषय में कहना ही क्या ? किन्तु इसकी पद्धति, सत्यनिष्ठा, प्रगतिशीलता, क्रमबद्धता, कार्यकारण पद्धति आदि के समान आध्यात्मिकता को होना चाहिए इसलिए मैंने वैज्ञानिक विश्लेषण आध्यात्मिक के साथ जोड़ता हूँ। मैं (आ. कनकनंदी) भी इसी प्रकार 'आध्यात्मिक-वैज्ञानिक धर्म' को मानता हूँ भले बाह्य परम्परा, मत-पंथ, क्रिया काण्ड तथा द्रव्य, क्षेत्र, काल और कुछ भी क्यों न हो।

यह सब मैंने देश-विदेश के विभिन्न धर्म-दर्शन, विज्ञान, राजनीति-कानून, इतिहास-पुराण, महापुरुषों की जीवनी तथा अनुभव के गहन-निष्पक्ष अध्ययन के आधार पर एवं मेरे दीर्घ अनुभव के आधार पर लिख रहा हूँ।

वस्तु का स्वभाव धर्म है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य,ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह एवं उत्तम क्षमा, मार्दव,आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप,त्याग, आकिञ्चन्य, ब्रह्मचर्य ये आत्म धर्म हैं। रत्नत्रय अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान, सम्यक् चारित्र धर्म हैं।अनेकान्त (स्याद्वाद) बारह भावना एवं मैत्री, प्रमोद, करुणा एवं माध्यस्थ भाव भी धर्म है।

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संयमो तवो।

देवा वि तस्स पणमंति जस्स धम्मे सयामणो ।।(भ. महावीर)

धर्म ही लोक में उत्कृष्ट मंगल है,अहिंसा-धर्म है, संयमधर्म है, तप धर्म है। जिसका मन सर्वदा धर्म में लीन रहता है, उसको स्वर्ग के देव भी नमस्कार करते हैं ।

पवित्रि क्रियते येन येनैव ध्रियते जगत्।

नमस्तस्मै दयार्द्राय धर्म कल् पाङ्पािय वै ।।(जैनधर्म)

जिससे जीव पवित्र हो जाता है और जो विश्व को धारण करता है, दया से आर्द्र धर्म रूपी कल्पवृक्ष के चरण को मैं नमस्कार करता हूँ, अर्थात् धर्म से ही पतित जीव पावन हो सकता है, दानव मानव हो सकता है, मानव महामानव तथा भगवान् बन सकता है। यह सम्पूर्ण चराचर विश्व धर्म से आधारित है।

यस्मात् अभ्युदय निश्रेयस् सिद्धिः स धर्मः । (वैदिक धर्म)

जिससे स्वर्गादिका अभ्युदय सुख एवं निर्वाण रूपी परमसुख की सिद्धि होती है उसको धर्म कहते हैं।

मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे (यजुर्वेद)

मैं मैत्री की दृष्टि से सब प्राणियों को देखूँ।

अप्पा कत्ता विकत्ता य दुक्खाण य सुहाणय।

अप्पा मित्तमामित्तं य दुपट्ठिय सुपट्ठिय ।। (महात्मा बुद्ध)

आत्मा स्वयं सुख-दुःख का कर्ता है। सुपथगामी आत्मा स्वयं का मित्र है तो कुपथगामी आत्मा स्वयं का शत्रु है।

इंद्रियाणा निरोधेन रागद्वेष क्षयेण च।

अहिंसत्वं च भूतानाममृतत्वाय कल्पते ।। (मनु स्मृति)

दुष्ट इन्द्रियों की दुष्प्रवृत्ति के निरोधसे, रागद्वेष के खय से और अहिंसा तत्व से जीवों को अमृत-तत्त्व की प्राप्ति होती है।

आत्मा नदी संयम पूर्ण तीर्था, सत्योदका शील तटोदयोर्मिः ।

तत्राभिषेकं कुरु पाण्डु पुत्रः न वारिणा शुद्धयति चान्तरात्मा ।। (श्रीकृष्ण)

आत्मा ही पवित्र नदीहै, संयम रूपी पवित्र तीर्थ है,जो सत्य नीर (पानी) से भरा है, शील रूपीतट है, दया रूपी लहरें हैं ऐसे आत्म गंगा (नदी) में हे पाण्डु नन्दन ! तुम स्नान करो, जिससे आपकी आत्मा पवित्र होगी। केवल गङ्ग के पानी से स्नानकरने से अन्तरात्मा पवित्र नहीं होगी।

अहिंसा सत्यमस्तयें ब्रह्मचर्य सुसंयमः ।

मद्य मांसादि त्यागश्च तद्धि लक्षणम् ।। (महाभारत, शांति पर्व)

घृति क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः ।

घीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।। (वैदिक धर्म)

धृति, क्षमा, मनोनिग्रह, अचौर्य, शुचिता, इन्द्रिय दम, धीमता, विद्या, सतय्, अक्रोध क्षमा यह धर्म के दस लक्षण है।

अहिंसा सत्यमस्तयें ब्रह्मचर्य सुसंयम।

मद्य-मांस मधु त्यागो रात्रि भोजन वर्जनम् ।। (मार्कण्डेय पुराण)

अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, उत्तम संयम, मद्य-मांस, मधु सेवन त्याग, रात्रि भोजन-त्याग धर्म है।

'अमृतत्व हेतु भूतं परममहिंसारसायनं लब्धा।' (पुरुषार्थसिद्धयुपाय)

अमृत तत्त्व के हेतुभूत अहिंसा परम रसायन है अर्थात् अहिंसा रूपी अमृत पान से जीव को शाश्वत अजरामर, अनन्त सुख सम्पन्न मोक्ष मिलता है।

अहिंसा प्रतिष्ठायां तत्सन्निधौ वैरि त्यागः।' (पातञ्जलियोग दर्शन)

अहिंसा में स्थिर होने पर उस अहिंसक महात्मा के सम्पर्क-सहवास, दर्शन, स्पर्शन से सब प्राणियों का द्वेष भाव नष्ट हो जाता है।

We can't want blind Religion not alsoonly Science but we want a Scientific Religion. (आचार्य कनकनंदी)

अब्भंतरसोधीए बाहिरसोधी वि होदि णियमेण।

अब्भंतरदोसेण हु कुणदि णरो बहिरे दोसे ।। (भगवती आराधना)

अभ्यन्तर में विशुद्धि होने पर बाह्य विशुद्धि नियम से होती है। अभ्यन्तर में दोष होने से ही मनुष्य शारीरिक दोष करता है।

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।

जाके हिरदे सांच है ताके हिरदे आप ।। (कबीर)

लेस्सासोधी अज्झवसाणविसोधीए होइ जीवस्स।

अज्झवसाणविसोधी मंदकसायस्स णादव्वा ।।(शिवाचार्य)

परिणामों की विशुद्धि होने से लेश्या की विशुद्धि होती है। और जिसकी कषाय मन्द है उसके परिणामों में विशुद्धि होती है।

- सत्य, अहिंसा एवं न्याय ही धर्म है। (डॉ. राधाकृष्णन्)
- प्रत्येक आदमी वैसा होता है, जैसे कि उसके विचार है, होते हैं ।
- पवित्र आदमी की शक्ति अपार है। उसे कौन माप सकता है ? वह अनन्त है। वह ईश्वरीय बल है। वह व्यक्तित्व प्राप्ति का राजमार्ग है
- आत्म तिरस्कार सम्बन्धी प्रत्येक विचार व्यक्तित्व की शक्ति और मूल का नाशक लुटेरा तथा रोग है।

शेष पेज 25 पर...

आगम दर्शन

कषायपाहुड़

यह ग्रन्थ मूल सिद्धांत ग्रन्थ है। जिसे आचार्य गुणधरजी ने ज्ञान विच्छेद के भय से पहले केवल 180 गाथाओं में निबद्ध किया था। आचार्य परम्परा से उसके ज्ञान को प्राप्त करके आचार्य आर्य भक्षु व नागहस्तिने ई. 93-162 में पीछे इसे 215 गाथा प्रमाण कर दिया। उनके सान्निध्य में ही ज्ञान प्राप्त करके यति वृषभाचार्य ने ई. 150-180 में इसको 15 अधिकारों में विभाजित करके इस पर 6000 चूर्ण सूत्रों की रचना की। इन्हीं चूर्ण सूत्रों के आधार पर आचार्य उच्चारणाचार्य ने विस्तृत उच्चारणा लिखी। इसी उच्चारणा के आधार पर आचार्य बप्पदेव ने ई.श. 5-6 में एक और भी संक्षिप्त उच्चारणा लिखी। इन्ही आचार्य बप्पदेव से सिद्धांत ज्ञान प्राप्त करके पीछे ई. 816 में आचार्य वीरसेन स्वामी ने इस पर 20,000 श्लोक प्रमाण जयधवला नाम की अधूरी टीका लिखी। जिसे उनके पश्चात् उनके शिष्य श्री जिनसेनाचार्य ने ई. 837 में 40,000 श्लोक, प्रमाण और भी रचना करके पूरी की। इस ग्रन्थ पर उपरोक्त प्रकार अनेकों टीका लिखी गयी। आचार्य नागहस्ती द्वारा रची गई 35 गाथाओं के संबंध में आचार्यों का कुछ मतभेद है।

संक्रमण में कही गयी पैंतीस वृत्ति गाथाएं बन्धन नामक अधिकार से प्रतिबद्ध है, इसलिए इन्हें 180 गाथाओं में सम्मिलित करके प्रतिज्ञा क्यों नहीं की अर्थात् 180 के स्थान पर 215 गाथाओं की प्रतिज्ञा इसलिए नहीं की क्योंकि ये पैंतीस गाथाएं तीन गाथाओं के द्वारा प्ररूपित किए गए पांच अर्थाधिकारों से बन्धक नाम के ही अर्थाधिकार में प्रतिबद्ध हैं इसलिए इन 35 गाथाओं को 180 गाथाओं में सम्मिलित नहीं किया, इसलिए इन अर्थाधिकारों में से एक अर्थाधिकार में ही वे 35 गाथाएं प्रतिबद्ध हैं।अथवा यह बात अर्थापत्ति से ज्ञात हो जाती है। कि ये 35 गाथाएँ बन्धक अधिकार में प्रतिबद्ध है।

चूंकि 180 गाथाओं को छोड़कर सम्बन्ध अद्धा परिमाण और संक्रमण का निर्देश करने वाली शेष गाथाएं नाग हस्ति आचार्य ने रची है, इसलिए गाहसदे असीदे ऐसा कहकर नाग हस्ति आचार्य ने 180 गाथाओं की प्रतिज्ञा की है, ऐसा कुछ व्यख्यानाचार्य कहते हैं। परन्तु उनका ऐसा कहना घटित नहीं होता है, क्योंकि सम्बन्ध गाथाओं अद्धा परिमाण का निर्देश करने वाली गाथाओं और संक्रम गाथाओं के बिना 180 गाथाएं ही गुणधर भट्टारक ने कही है। यदि ऐसा माना जाय तो गुणधर भट्टारक को अज्ञपने का प्रसंग प्राप्त होता है। इसलिए पूर्वोक्त अर्थ ही ग्रहण करना चाहिए। ■

पेज 23 का शेष...यदि वह परमात्म पद को पाने का संकल्प करे, तो परमात्मा बन सकता है।

- किसी बुरी आदत के सामने झुकने से आदमी, अपने ऊपर राज्य के अधिकार को खो देता है। (लिलि एलन)
- मैं अपना जीवन कहीं भी क्यों न बिताऊं, परम आत्मसन्तुष्ट रहूँगा। और सारी आकस्मिक घटनाओं का सामना करने के वास्ते तैयार रहूँगा। (वाल्ट विटमैन)
- सत्य मेरा भगवान् / लक्ष्य है और उसका साधन है अहिंसा। (म. गांधी)
- सत्य पर डटे रहो, न्याययुक्त काम को करते हुए कभी लज्जित मत होओ। जिस बात को तुम न्याययुक्त समझते हो, उसी का निश्चय करो और फिर उस पर जम जाओ।
- Live and let live (जार्ज इलियट)
- सचवं भगवं। सत्य ही भगवान है। (भ. महावीर)
- आत्मविश्वास रखो, क्योंकि इसी लोहे के तार से प्रत्येक हृदय स्पन्दित होता है। (इमर्सन)
- "Thous shaln't kill". (आचार्य क (ईसा मसीह)
- जो कुछ तुम्हें करना है, उसे अपनी पूरी ताकत से करो (बाइबल)
- सुन्दर आकृति सुन्दर मुख की अपेक्षा उत्तम है, किन्तु सद् व्यवहार सुन्दर आकृति से भी अच्छा है। वह मूर्तियों और चित्रों से भी अधिक आनन्द देता है। यह सारी ललित कलाओं में सर्वश्रेष्ठ कला है। (इमर्सन)
- दूसरे आदमियों से अपने प्रति जिस व्यवहार की आशा करते हो, वैसा ही व्यवहार तुम उनसे करो। यही महान नियम् है और महात्माओं का उपदेश है। (ईसा मसीह)
- जिन आदमियों से के हृदय पवित्र हैं, वे धन्य हैं, क योंकि वे अवश्य परमात्मा के दर्शन करेंगे। (अज्ञात)
- अपने को चाहने पन के लिए मनुष्य को अपने से बाहर निकलकर, तटस्थ बनकर आत्मानिरीक्षण करना होगा। (अनाम)
- एक आदमी का जीवन पूर्ण रूप से उसके मन से ही पैदा होता है। (जेम्स ऐलन)
- प्रतिदिन पवित्र विचारों का मनन करने से ध्यानी आदमी पवित्र तथा उज्जवल विचारों को सोचने की आदत डालता है। यह आदत उसको सदा पवित्र, उज्ज्वल तथा समुचित रूप से किये हुए कामों की ओर ले जाती है।
- आत्म संयमी आदमी ही अनन्त सुख को जानते हैं। (जेम्स ऐलन)
- दिव्य स्वतंत्रता ईश्वर की श्रेष्ठ वस्तु है। (सर एडविन अर्नाल्ड)
- अपनी मानसिक अवस्थाओं को वश में कर दो। उत्तेजनाओं का शासन अस्वीकार करो (लिली एलन)
- मन की बदली हुई प्रवृत्ति आदमी के चरित्र, आदतों और जीवन को पलट देता है। (जेम्स ऐलन)
- दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान। (तुलसीदास)
- जो कुछ हमें सीखना है, वह पारस्परिक तुलनात्मक समन्बन्धह अर्थात् प्रत्येक वस्तु का

[illegible]

• [illegible]

• [illegible]

[illegible] 'आध्यात्मिक-वैज्ञानिक धर्म' [illegible]

[illegible]

[illegible]
दिसम्बर 2016
जाते वर्ष के नाम

[illegible]

अ.भा. संस्कार सागर पहेली
जनवरी 2016

प्रथम : श्रीमती [illegible], सागर (म.प्र.)

द्वितीय : श्रीमती [illegible], इन्दौर (म.प्र.)

तृतीय : श्रीमती [illegible] जैन, नागपुर (महा.)

वर्ग पहेली क्र. 211
जनवरी 2016 के विजेता

प्रथम : श्रीमती [illegible] (म.प्र.)

द्वितीय : श्रीमती [illegible] जैन, [illegible] (म.प्र.)

तृतीय : श्रीमती [illegible] जैन, [illegible] (म.प्र.)

अ.भा. संस्कार सागर पहेली : दिसम्बर 2016 का हल

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]
9. [illegible]
10. [illegible]
11. [illegible]
12. [illegible]
13. [illegible]
14. [illegible]
15. [illegible]
16. [illegible]
17. 1008
18. [illegible]
19. [illegible]
20. [illegible]
21. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
27. [illegible]
28. [illegible]
29. [illegible]
30. [illegible]
31. [illegible]
32. [illegible]
33. [illegible]
34. [illegible]
35. [illegible]
36. [illegible]
37. [illegible]
38. [illegible]
39. [illegible]
40. [illegible]
41. [illegible]
42. [illegible]
43. [illegible]
44. [illegible]
45. [illegible]
46. [illegible]
47. [illegible]
48. [illegible]
49. [illegible]
50. [illegible]

पुराण प्रेरणा

यथा राजा तथा प्रजा

संस्तुवे सन्मतिं वीरं महावीरं सुखप्रदम्।
वर्धमानं महत्यादि महावीराभिधिमान् कम्॥

केवलज्ञान रूपी वीर, महावीर, वर्द्धमान महति, महावीर आदि नाम वाले सनमति की स्तुति करता है।

अनेक भूपसंसेव्यो महामण्डलेश्वरः।
दाता भोक्ता विचारज्ञः स राजा वादिचक्रमृत॥

वह महामण्डलेश्वर राज अनेक राजाओं से सेवित, दाता भोक्ता, विचार को जानने वाले तथा वादियों के समूह को धारण करता था।

प्रजा सर्वापि तद्राज्ये जाता सद्धर्मतत्परा।
सत्यं हि लोकाकिं वाक्यं यथा राजा तथा प्रजा॥

उसके राज्य में समस्त प्रजा सद्धर्म में तत्पर हुई। लौकिक वाक्य सच ही है कि जैसा राजा होता है वैसी राजा होती है।

अन्ये विरोधनश्चापि महिषस्तुरगादधः।
पशवोऽपि श्रावका जाता भिल्लादिषु च का कथा॥

अन्य विरोधी भैसे, घोड़े आदि पशु भी श्रावक हो गए। भीलादि की तो बात ही क्या।

निर्जलाः सजला जाताः सर्वे पद्माकूरादधः।
प्रशान्ताः सज्जना शीघ्रं ज्वलन्तो वनवन्हयः॥

समस्त निर्मल सरोवर सजल हो गये। वन में प्रज्ज्वलित होने वाली अग्नि शांत हो गई।

■

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों को क्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. म्‌ न्‌ उ ई ई श र अ अ म्‌ य्‌ आ स्‌ अ र्‌ अ ग ई ज
2. म्‌ न्‌ उ ई ई श र सु ध्‌ आ आ स्‌ अ र्‌ अ ग ई ज
3. म्‌ न्‌ उ ई ई श र स आ त्‌ अ म्‌ आ स्‌ अ र्‌ अ ग ई ज
4. म्‌न्‌उईईशरस्‌आभअस्‌अव्‌अव्‌आस्‌अर्‌अगईज
5. म्‌ न्‌ उ ई ई श र अ स आ म्‌ ध्‌ इ स्‌ अ र्‌ अ ग ई ज

परिणाम :

दिसम्बर 2016: (1) देवसेन (2) शूरसेन (3)विश्वसेन (4) जिनसेन (5) वीरसेन

संग्रहालय एवं रोजगार

कैरियर

पुरानी चीजों को आप बाहर फेंक देते हैं। या बड़ी खूबसूरती से सहेजते हैं, अगर आपको सहेजने का शौक है तो करियर के रुप में इसे अपनाया भी जा सकता है।

अतीत को समझना और उनसे सीखना मानव व्यवहार का हिस्सा है। हमारा अतीत हमारे भविष्य के निर्माण में सहायक बन सकता है। यही वजह है कि हम अपनी प्राचीन विरासतों को सहेज कर रखते हैं और इसे म्यूजियोलॉजी कहते हैं। शुरुआत में तो इस काम के लिए किसी स्पेशल डिग्री या डिप्लोमा की जरूरत महसूस नहीं की जाती है लेकिन अब इस फील्ड में भी स्पेशलाइजेशन हो गया है। पूरी तरह से इस सब्जेक्ट में टेक्निकली ट्रेड प्रोफेशनल की जरूरत महसूस की जा रही है। अगर आप भी अतीत को सहजने में रूचि रखते हैं और इससे अपना करियर बनाना चाहते हैं तो यह क्षेत्र आपके लिए है, अगर व्यक्तिगत गुणों की बात करें तो म्यूजियोलॉजी का फील्ड उन्हीं लोगों के लिए है। जिनके पास हिस्ट्री ज्योग्राफी आर्ट आदि विषयों की आदि जानकारी और समझ है। जो कला से जुड़े तथ्यों को समझने, मैनेज करने और उनके बारे में लोगों को बताने की काबिलियत रखते हो। अच्छी राईटिंग स्किल रिसर्च करने की प्रवृत्ति हिन्दी और अंग्रेजी के अ लावा कुछ और भाषाओं का ज्ञान हो तो इस क्षेत्र में ऊंचाईयों को छुआ जा सकता है। म्यूजियोलॉजी से संबंधित कोर्स में मास्टर्स इन म्यूजियोलॉजी कोर्स शामिल है। यह छात्रों की पहली पसंद है, इस कोर्स को हिन्दी, एन्सियेन्ट हिस्ट्री, आर्कियोलॉजी, एंथोपोलॉजी, अर्थ साइंस, एग्रीकल्चर, एनवाय मेटल साइंस मैरिन साइंस आदि सब्जेक्ट में बैचलर या मास्टर डिग्री रखने वाले छात्र कर सकते हैं। म्यूजियोलॉजी से रिलेटेड कोर्स करने के बाद आप नेशनल म्यूजियम आर्कियो-लॉजिकल, म्यूजिम प्राइवेट, म्यूजियम आर्ट गैलरीज आदि में जॉब कर सकते हैं। स्टूडेंट्स यहां क्यूरेटर रिसर्च एसोसिएट प्रबंधक आदि की पोस्ट पर काम कर सकते हैं, अगर इस फील्ड में अच्छी नॉलेज के साथ-साथ अच्छा अनुभव भी हो जाता है। तो विदेशों में जॉब की काफी संभावनाएं है म्यूजियोलॉजी की पढ़ाई के दौरान छात्रों को विभिन्न म्यूजियम टाइम पीरियड के साथ उनमें आ रहे बदलावों के बारे में विस्तार से पढ़ाया जाता है इसके साथ ही उन्हें आर्ट गैलरी की देखरेख उसमें चीजों का प्रस्तुतिकरण संरक्षण रखी गई चीजों के बारे में जानकारी, नई चीजें जुटाना डिजाइनिंग डाक्यूमेंट्स के अलावा सब्जेक्ट से संबंधित मार्केटिंग के बारे में भी पूरी जानकारी दी जाती है। किसी भी अच्छे इंस्टीट्यूट से इस सब्जेक्ट का ट्रेनिंग लेकर इस फील्ड में एंट्री की जा सकती है।

प्रमुख संस्थान

1. नेशनल म्यूजियम इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली
   www.nmi.gov.in
2. एसएस यूनिवर्सिटी, वडोदरा
   www.msubaroda.ac.in
3. कलकत्ता यूनिवर्सिटी कोलकाता
   www.caluniv.ac.in
4. बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी, वाराणसी
   www.bhu.ac.in
5. अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़
   www.amu.ac.in

■

प्राचीन अतिशय क्षेत्र कारीटोरन

• श्रेयांस जैन, ककरवाहा, टीकमगढ़ •

बुन्देलखंड अपने सांस्कृतिक गौरव के लिए सदैव कीर्तिमान रहा है । बहोरी, देवगढ़, खजुराहो, अहार, द्रोणगिरि, मदनपुर, बानपुर एवं पंजनारी अदि तीर्थक्षेत्रों क़ी पावन श्रृंखला में तीर्थंकर चक्रवर्ती, कामदेव जैसी तीन पदवी के धारक भगवान शांतिनाथ, कुं थुनाथ और अरहनाथ की मूर्तियों से सुशोभित भव्य जिनालयों से युक्त श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र कारीटोरन बुंदलेखण्ड के हृदय भाग में स्थित है। ललितपुर शहर से 70 कि.मी. महरौनी कस्बा से 28 कि.मी., मड़ावरा से 15 कि.मी. दूरी पर यह मनोज्ञ तीर्थस्थल है। यह बुन्देलखण्ड सीमा के अंतर्गत वर्त्तमान उत्तरप्रदेश राज्य के ललितपुर जिले में हैं, जो कि पूर्व चेदि जनपद का भू-भाग(विख्यात) बताया जाता है। ललितपुर जिले में इस क्षेत्र के अलावा देवगढ़, सीरौन, बानपुर, सीरौनकलाँ, पवा जी, चांदपुर, जहाजपुर, वालावेहट, दुघई, गिरारा, नवागढ़, क्षेत्रपाल जैसे प्राचीन क्षेत्र है जो बुन्देलखण्ड में अवस्थित जैन संस्कृति के गढ़ माने जाते हैं।

कारीटोरन के पश्चिम में वीरांगना लक्ष्मीबाई की कर्मभूमि एवं करगुवांजी क्षेत्र झांसी स्थित है, तो दूसरी और परम स्वतंत्रता सेनानी मर्दन सिंह जू देव की विजयगाथाओं को गाता अतिशय क्षेत्र बानपुर है और पूर्व में वीर बुन्देला शेरे बुन्देल महाराजन बखतवली शाह जू देव की गौरव नगरी शाहगढ़ है। छत्रसाल बसाया छतरपुर और उसके पास ऐतिहासिक नगरी कला क्षेत्र खजुराहो स्थित है। उत्तर दिशा में वीर बुन्देला लाला वीर हरदौल के वंशजों का नगर टीकमगढ़ स्थित है।

तीर्थ महिमा –

भवदधि तारक तीर्थ शुचि, शांति सुमंगल क्षेत्र।
भुक्ति मुक्ति दातार शुभ, शाश्वत सुख के नेत्र॥

सभी धर्म और सम्पदाओं के तीर्थों को पुण्य सलीला लोकालोक के सुख शान्ति प्रदायक माना जाता है। लोकप्रिय पावन क्षेत्र को तीर्थ कहा जाता है। उसका तात्पर्य संसार समुद्र से तिरने का साधन रूप ही है ।तीर्थो को तीन श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है । - सिद्धक्षेत्र, कल्याणक्षेत्र या मंगलक्षेत्र तथा अतिशय क्षेत्र कहलाते हैं।

अतिशयक्षेत्र – ये देवोपुनीत चमत्कार या देवीय अतिशयों केकारण पूज्यता या रूयाति को प्राप्त होते हैं।

अतिशय क्षेत्र कारीटोरन के जिनालय–

प्रथम जिनालय– श्री शांतिनाथ जिनालय- यह प्राचीन मठनुमा जिनालय जिसमें श्री शांतिनाथ, कुंथुनाथ अरहनाथ के 7 फुट उतुंग अतिशयकारी ओर मनमोहक जिनबिम्ब एक प्राचीन पाषाण से बने हुए में स्थित है।

इस मठ की प्रतिष्ठा चंदेलों में उत्तर काल में होना संभव है कि यह प्रतिमा की प्रतिष्ठा का वर्ष हो। सैकड़ो वर्षो पूर्व समय चक्र के प्रभाव से मठ शिखर भाग क्षतिग्रस्त हुआ होगा और नगर के उजड़ जाने के उपरान्त सम्पूर्ण मठ प्राकृतिक वनस्पतियों और पेड़ों से आवृत्त हो गया होगा। जो कि विक्रम की 18 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में समीपवर्ती ग्राम लुहर्रा के समाज श्रेष्ठियों को ज्ञात

हुआ, तब उन्होंने उस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाकर शिखर का निर्माण करवाया जाो शांतिनाथ जिनालय के नाम से प्रसिद्ध है।

द्वितीय जिनालय – श्री संभवनाथ जिनालय -श्री शांतिनाथ जिनालय के समीप ही उसी प्रकार की रचना से युक्त भव्य मनोहर शिखर युक्त भगवान सम्भवनाथ के जिनालय का निर्माण करवाया जिसकी प्रतिष्ठा विक्रम संवत् 1878 में हुई। यह द्वितीय जिनालय एक ही पाषाण फलक पर निर्मित विशाल एवं पदमासन मुद्रा में विराजमान भगवान संभवनाथ के बिम्ब से युक्त हैं। यह प्रतिमा कुण्डलपुर के बड़े बाबा आदिनाथ के जैसे बिम्ब युक्त प्रतीत होती है। विद्वानों एवं शोधकर्ताओं भविष्य में इस अबूझ पहेली को निश्चित सुलझा लेंगे।

तृतीय जिनालय – श्री नेमीनाथ जिनालय- इस तीसरे मंदिर में विराजे बाइसवें तीर्थंकर नेमीनाथ जी है, जिसका निर्माण विक्रम संवत् 1975 में निर्मित नवीन जिनालय में श्यामवर्ण पदमासन नेमीनाथ स्वामी के विम्ब विराजमान है जिसे सिंघई हल्कूजी द्वारा कराया गया, लेकिन तत्कालीन शासकीय विपरीतताओं के कारण उसका पंचकल्याणक नहीं करवा पाये। उस मंदिर में विराजमान प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा वाद में कुड़ीला जिला टीकमगढ़ म.प्र. में स़म्पन्न हुए पंचकल्याणक में की गई।

मानस्तम्भ – यह क्षेत्र लगभग 1977-78 से प्रकाश में आया है तब से अपनी गति से विकास की ओर शनै-शनै बढ़ता गया 2008 में नवीन कार्यकारिणी समिति ने नये संकल्पों के साथ पदभार ग्रहण करते ही निर्मलकुमार सेठी जी ने क्षेत्र विकास हेतु मजबूत बाउण्ड्रीवाल एवं शांतिनाथ जिनालय के सामने मानस्तम्भ निर्माण का सुझाव दिया जिसे कार्यकारिणी समिति ने स्वीकृति करते हुए क्षेत्रिय समाज ने वार्षिक मेला में स्वीकृति प्रदान की। इस पिछड़े हुए जगह में क्षेत्र का अतिशय ही कहेंगे कि 01.01.2010 मानस्तम्भ का भूमिपूजन शिलान्यास कर अल्प समय में चमत्कारिक रूप से 19 नवम्बर से 25 नवम्बर 2010 में श्री मज्जिनेन्द्र मानस्तम्भ प्रतिष्ठा पंचकल्याणक गजरथ महोत्सव का आयोजन किया गया। इस मानस्तम्भ में आठ मूर्तियां मध्य में चार मूर्तियाँ ऊपर विराजमान की गई। 41 फुट उत्तुंग में बुंदेलखण्ड में प्रथम मानस्तम्भ निर्माण का गौरव प्राप्त किया।

रत्नत्रय जिनालय – यह रत्नमयी मूर्तियों का गुप्त नीचे भौयरें में रत्नों की मूर्तियों का जिनालय है जो सुरक्षा की दृष्टिकोण से सदैव बंद रहता। विशेष अवसरों पर ही दर्शन कराये जाते हैं।

आगामी योजनाए – क्षेत्र पर 80 70वर्गफुट पर अष्टधातु से निर्माणाधीन सहस्रकूट चैत्यालय का कार्य चल रहा है जिसका भूमिपूजन तथा शिलान्यास प.पू. आचार्यश्री विशुद्धसागर जी महाराज द्वारा कराया गया। क्षेत्र पर श्री संभवनाथ दिगम्बर जैन गुरुकुल खोलने की योजना है। जिसमें 9 से 12 वीं कक्षा तक बच्चों को किसी वर्ग/जाति/धर्म के भेदभाव के बिना शिक्षा निःशुल्क दिलाने की है जिस हेतु 5 एकड़ भूमि खरीद ली गयी है। इसी तरह सामान्य रोगों की प्राथमिक चिकित्सा हेतु क्षेत्र पर श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन दातव्य औषधालय खोलने को प्रयासरत है जो क्षेत्र पर सभी गरीब लोगों का निःशुल्क चिकित्सा मुहैया कराने का प्रयास करेगी। ■

दुनिया भर की बातें

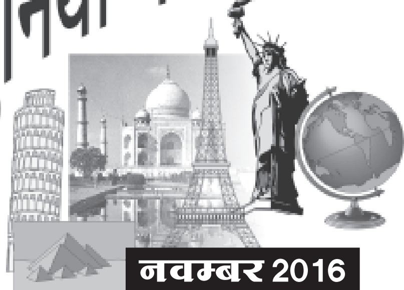

नवम्बर 2016

■ 1 नवम्बर

- पाकिस्तान की ओर से लगातार जारी गोलाबारी के बीच जम्मू संभाग में आठ और नागरिकों की जान चली गई 22 लोग घायल हो गये।

- ग्राम रजपुरा में दीपावली पर पति के शराब पीकर आने पर पत्नी ने फांसी लगा ली। पति ने भी जहर खाकर जान दे दी।

- उ.प्र. के मुजफ्फरनगर के कवाल गांव के मूल निवासी चार लोगों की पाकिस्तान के कराची में आतंकियों ने गोली मारकर हत्या कर दी। इनमें तीन सगे भाई और एक बेटा शामिल है।

■ 2 नवम्बर

- नई दिल्ली वन रैंक वन पेंशन को लेकर पूर्व सैनिक राम किशन ग्रेवाल आत्महत्या ने राजनीति को गरमा दी है।

- राजस्थान में देश के सबसे बड़े ड्रग्स रैकेट का भंडाफोड़ हुआ है। राजस्व खुफिया निदेशालय ने उदयपुरा में प्रतिबंधित दवाओं की अब तक सबसे बड़ी खेप बरामद की।

भारत और पाकिस्तान के बीच बेहद खराब हो चूके कूटनीतिर रिश्ते लगातार बदतर होते जा रहे हैं। कुछ रोज पहले ही भारत ने नई दिल्ली स्थिति पाक उच्चायोग में चलाये जा रहे एक जासूसी गिरोह का भंडाफोड़ किया।

■ 3 नवम्बर

- वस्तु और सेवा कर (जीएसटी) की दरों प़र केन्द्र और राज्यों के बीच सहमति बन गई। जीएसटी प्रणाली के तहत देश में 5,12, 18,28 फीसदी की चार दरें होगी।

- नई दिल्ली(श्रीनगर) लेह से करीब 250 किलोमीटर पूर्व में स्थित लद्दाख डिवीजन के डेमचोक सेक्टर में भारत और चीन की सेना आमने-सामने आ गई।

■ 4 नवम्बर

- नई दिल्ली देश की राजधानी दिल्ली 17 साल के सबसे बड़े स्माग से घूट रहीहै। राजधानी दिल्ली और एनसीआर में दिपावली के बाद से ही गहरी धूंध छाई हुई है।

- मुंबई में शुक्रवार को टाटा समूह कंपनी इंडियन होटल्स की बोर्ड मीटिंग से पहले सायरस मिस्त्री की तस्वीर लेने के सवाल पर सुरक्षाकर्मियों और फोटोजर्नलिस्टों के बीच हाथापाई हो गई।

- चेन्नई : तमिलनाडु कीसीएम जयललिता अब स्वस्थ है और ये उनकी इच्छा पर निर्भर है कि वे घर कब जाना चाहती है।

■ 5 नवम्बर

- नई दिल्ली : विवादास्पद इस्लामिक उपदेशक जाकिर नाईक की संस्था आईआरएफ एजुकेशनल ट्रस्ट को प्राथमिक अनुमति श्रेणी में टाल दिया गया।

-असम और इससे सटे नागालैंड के 20 कि.मी.के इलाके में अफस्सा छः महीने के लिए बढ़ा दिया गया है। केन्द्र ने इसे अशांत क्षेत्र घोषित किया है और यहां 1990 से यह कानून लागू है।

- प्रो. कृपालसिंह वडूंगर को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी(एसजीपीसी) का तीसरीबार अध्यक्ष चुना गया।

■ 6 नवम्बर

- नई दिल्ली विवादित मीट कारोबारी मोईन कुरैशी की मुश्किल और बढ़ गई।आयकर विभाग ने नई काला धन निरोधक कानून के तहत कुरैशी को नोटिस जारी किया।

- काश्मीर में एलओसी पर पुंछ जिले की कृष्णा घाटी तथा सब्जियां सेक्टर में पाकिस्तान की गोलाबारी में दो जवान शहीद हो गये। चार जवान और एक महिला

एपीओ समेत छः लोग घायल हो गये।

- नई दिल्ली : हाईकोर्ट ने स्पष्ट किया है कि गर्भावस्था के दौरान पत्नी द्वारा शारीरिक संबंध बनाने से मना करना पति के प्रति क्रूरता नहीं है।

■ 7 नवम्बर

- महात्मा गांधी के पौत्र 87 वर्षीय कनुभाई का निधन हो गया। उनका सूरत के एक चेरिटेबल अस्पताल में उपचार चल रहा था।

- भाजपा की वरिष्ठ नेता व पूर्व केन्द्रीय मंत्री जयवंती बेन मेहता का निधन हो गया।

- केन्द्र ने एनडीटीवी पर एक दिन के लगाए प्रतिबंध पर अपने कदम वापस खींच लिए है।

■ 8 नवम्बर

- देश में 8 नवम्बर की आधी रात से 500 और 1000 रुपये के नोटों की मान्यता खत्म कर दी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश के नाम एक विशेष संबोधन में इस नए फैसले का ऐलान किया।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एक पखवाड़ेके अंदर लगातार दूसरी बार सेना के तीनों अंगों के प्रमुखों और राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल के साथ बैठक की।

■ 9 नवम्बर

- वाशिंगटन : अरबपति कारोबारी डोनाल्ड ट्रम्प सबसे शक्तिशाली देश की तजुर्बेकार राजनीतिज्ञ हिलेरी क्लिंटन को पराजित करके 45 वें राष्ट्रपति बन गए।

- राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी की पुस्तक दि ट्रब्यूलेंट इयर्स 1980-1996 से विवादित अंश हटाने की मांग संबंधी याचिका पर पाटियाला हाऊस कोर्ट में सुनवाई हुई।

■ 10 नवम्बर

- इस्लामाबाद : भारतीय उच्चायोग के तीन और अधिकारियों ने कल पाकिस्तान छोड़ दिया।

- नई दिल्ली : कालेधन पर प्रहार करने के उद्देश्य से 1000 व 500 का नोट बंद करने के केन्द्र सरकार के फैसले के खिलाफ जहां जनहित याचिका हुई है। वही सरकार भी सुप्रीम कोर्ट पहुँची है।

वाशिंगटन अमेरिका में राष्ट्रपति पद का चुनाव जीते डोनाल्ड ट्रम्प के खिलाफ हुई शहरों ने हजारों लोग सड़क पर उतर आए और नारेबाजी की व कई वाहनों में आग लगा दी।

■ 11 नवम्बर

- टोक्यो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और जापानी पीएम शिंजो अबे के बीच राजनीति के बाद भारत और जापान ने ऐतिहासिक असैन्य परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किया।

- शहीद नगर में जयपाल चौक पर अवैध रूप से चल रही दो जैकेट फैक्ट्रियों में तड़के भीषण आग लगने से 13 कर्मचारियों की मौत हो गई।

- सौम्या दुष्कर्म केस में फैसला देने वाले जजों के खिलाफ कथित तौर पर आपत्तिजनक टिप्पणी करने के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने पूर्व जज मार्कण्डेय काटजू को अवमानना नोटिस जारी किया।

■ 12 नवम्बर

- कराची : पाकिस्तान के अशांत ब्लूचिस्तान प्रांत में शाह नूरानी की दरगाह में हुए आइएस के हमले में 43 श्रद्धालुओं की मौत हो गयी और 100 से अधिक घायल हो गए।

- बिहार के सासाराम में सुबह बाइक सवार अपराधियों ने एक दैनिक समाचार पत्र के पत्रकार धर्मेन्द्र कुमा र सिंह (35) वर्ष की गोली मारकर हत्या कर दी।

- विदिशा तीन दिन पुराने विवाद के बाद विश्व हिन्दू परिषद के नगर सह-संयोजक दीपक कुशवाहा की एक दर्जन से अधिक लोगों ने हत्या कर दी।

■ 13 नवम्बर

- क्राइस्टचर्च न्यूजीलैंड में मध्यरात्रि 12 बजे रिएक्टर स्केल पर 7.8 तीव्रता वाले भूकम्प के झटकों से न्यूजीलैंड दहल उठा।

- बगदाद,आईएएनएस इराक के मोसुल में इस्लामिक स्टेट आइएस के पाव उखड़ने लगे है। अपने अंतिम गढ़ मोसुल को भी हाथ से निकलते देखते आतंकी संगठन का सरगना अबु बकर अल बगदादी शहर से भाग खड़ा हुआ है।

14 नवम्बर

- भारत की तरफ से जवाबी गोलाबारी में पाकिस्तान के सात सैनिक मारे गए।

- नई दिल्ली जमीयत उलमा-ए-हिंद ने अपने ऐतिहासिक अधिवेशन में घोषणा की है कि एक मजलिस (एक बैठक) में तीन तलाक गैर इस्लामी है।

- केन्द्र सरकार की ओर से चार दिन पहले जारी किए 2000 रूपये के नोट को बदमाशों ने नकली छाप डाला। पंजाब पुलिस ने कल गिरोह के दो सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया इनके पास से एक स्कैनर, कम्प्यूटर, फोटोकापी मशीन बरामद की।

15 नवम्बर

- नई दिल्ली विवादास्पद धर्म प्रचारक जाकिर नाईक की संस्था इस्लामिक रिसर्च फाउंडेशन (आईआरएफ) पर पांच वर्षों के लिए प्रतिबंध लगाया जाएगा।

- बिहार में 17 साल पहले हुए बहुचर्चित सेनारी नरसंहार के 10 दोषियों को फांसी की सजा सुनाई।

- सुप्रीम कोर्ट ने 500 और 1000 के नोट की बंदी के आदेश पर रोक लगाने से इंकार कर दिया।

16 नवम्बर

- जालंधर में 15 नवम्बर को 10बजकर 37 मिनट पर जिले के लोगो ने भूकंप के हल्के झटके महसूस किये।

-पिछले कई महीनों से अस्वस्थ चल रही विदेश मंत्री सुषमा स्वराज की किडनी फेल हो गई।

17 नवम्बर

- एक्ट्रेस मल्लिका सहरावत और उनके अज्ञात दोस्त पर यहां उनके अपार्टमेन्ट के बाहर हमला कर दिया और आंसू गैस छिड़ककर उन्हें बूरी तरह पीटा।

- नई दिल्ली लोकसभा स्पीकर सुमित्रा महाजन ने श्रीनगर के सांसद तारिक हमीद कर्रो का इस्तीफा मंजूर कर लिया।

18 नवम्बर

- केन्द्र सरकार के नोटबंदी के फैसले के खिलाफ विभिन्न हाईकोर्ट में दायर याचिकाओं पर चल रही सुनवाई पर रोक लगाने से सुप्रीम कोर्ट ने इंकार कर दिया।

- सुप्रीम कोर्ट ने अयोध्या विवाद में भाजपा नेता सुब्रह्मण्यम स्वामी की उस अर्जी पर अगले सप्ताह विचार करने के लिए सहमत हो गया जिसमें उन्होंने इस मामले की सुनवाई रोजाना करने को आवश्यक बताया है।

- नौसेना ने स्वदेश में निर्मित चार सोनार प्रणालियों को शुक्रवार को औपचारिक रूप से अपने बेड़े में शामिल किया।

19 नवम्बर

- गुवाहाटी असम के तिनसुकिया जिले के पेनगेरी इलाके में उल्फा और एनएससीएन के उग्रवादियों के विस्फोट में सेना के तीन जवान शहीद हो गये और छह अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए।

- आतंकी बुरहान वानी के मारे जाने से लगातार बंद चल रही घाटी में 133 दिनों बाद शनिवार को जनजीवन सामान्य नजर आया।

- अमेरिका ने कहा कि पाकिस्तान को उसकी धरती से चल रहे आतंकी संगठनों के खिलाफ प्रभावी कदम उठा सकता है और उसे उठाना चाहिए।

20 नवम्बर

- रेलवे की जरा सी लापरवाही ने 121 लोगो को उगता सूरज नहीं देखने दिया, कानपुर देहात जिले के पुखराया स्टेशन पर इन्दौर से पटना (राजेन्द्रनगर) जा रही एक्सप्रेस ट्रेन भीषण हादसे का शिकार हो गई। इससे 300 से अधिक लोग जख्मी हो गए।

- आध्यात्मिक गुरु श्री श्री रविशंकर जी को एक अन्तर्राष्ट्रीय शांति पुरस्कार से नवाजा गया।

21 नवम्बर

- छतरपुर : पुत्री के साथ दुष्कर्म और नवजात नातिन को मारने के मामले में सत्र न्यायाधीश भारत भूषण श्री वास्तव की अदालत ने फांसी की सजा सुनाई।

- बालासोर ओडिशा में चांदीपुर स्थित एकीकृत परीक्षण रेंज के तीन नंबर लाजिंग सेन्टर से जमीन से जमीन पर मार करने में सक्षम माध्यम दूरी की बैलिस्टिक मिसाइल पृथ्वी-2 का सफल प्रायोगिक परीक्षण किया।

22 नवम्बर

-मध्यप्रदेश के पूर्व राज्यपाल और यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री रामनरेश यादव का 21 नवम्बर को निधन हुआ।

- जम्मू कश्मीर के मच्छेल सेक्टर में एलओसी पर पाकिस्तान की बार्डर एक्शन टीम (बैट) के हमले में 56 राष्ट्रीय राइफल्स के तीन जवान शहीदहो गए। यहां पाक सेना ने एक बार फिर बर्बरता दिखाई और एक शहीद सैनिक के शव को क्षत-विक्षत किया।

23 नवम्बर

- राष्ट्रीय जांच एजेंसी ने कहा बैंकों से कि कट्टर प्रचारक जाकिर नाईक और उसके संगठन इस्लामिक रिसर्च फाउंडेशन के खाते फ्रीज कर दिए जाएँ।

- भारतवंशी निक्की हेली संयुक्त राष्ट्र में अमेरिका की अगली राजदूत होगी।

- किशतवाड़ा जिले के अगाल गांव में स्थित जेएंड के बैंक की शाखा से बीती रात चोरों ने 35 लाख रूपये उडा ले गये। जिसमें 21 लाख की करेंसी बाजार में मान्य नोट व 14 लाख हजार व 500 के नोट थे।

24 नवम्बर

- श्री नगर भारतीय सेना की ओर से मच्छल हमले पर मुंहतोड़ जवाब देने के बाद से सीमा पार से पाकिस्तानी गोलाबारी बंद है।

- बागपत बदरखा यमुना खादर में यूपी हरियाणा सीमा विवाद फिर गरम हो गया। हरियाणा के काश्तकारों ने फायरिंग करते हुए यूपी के किसानों की 400 बीघा की पुआर समेत दो झोपड़िया फूंक दी।

- चीनमें विद्युत उत्पादन केन्द्र के निर्माणाधीन प्लेटफार्म के ढहने से वहां काम कर रहे 68 लोगों की मौके पर मौत हो गई।

25 नवम्बर

- फिल्म अभिनेता अक्षय कुमार ने जैसलमेर के लोंगासोर गांव के शहीद जवान नरपत सिंह की पत्नी के खाते में नौ लाख रूपयेकी सहायता राशि जमा कराई।

- वक्फ बोर्ड कर्मचारी भर्ती घोटालेकी जांच कर रही केन्द्रि अन्वेषण ब्यूरों (सीबीआई) ने आप विधायक आमनतुल्ला खान के खिलाफ केस दर्ज कर लिया।

26 नवम्बर

-हवाना : पड़ोस में रहकर करीब 50 सालतक अमेरिका की आंखों की किरकिरी बने रहे फिदेल कास्त्रो 90 वर्ष ने कल हमेशा के लिए आंखे मूंद ली।

- इस्लामाबाद लेफ्टिनेंट जनरल कमर जावेद बाजवा पाकिस्तान के अगले सेना प्रमुख होंगे।

- चीन में तजाकिस्तान से सटी उत्तर पश्चिम सीमा पर आए 6.7 की तीव्रता के भूकम्प से एक आदमी की मौत हो गई। भूकम्प के तेज झटकों से कई मकान तबाह हो गये।

27 नवम्बर

- जामा मस्जिद के शाही इमाम सैय्यद अहमद बुखारी पर फिजूल याचिका लगाकर अदालत का समय बर्बाद करने पर तीस हजारी की सत्र अदालत ने 25 हजार रूपये का जुर्माना लगाया है।

- पंजाब के पटियाला में सबसे सुरक्षित कही जाने वाली नाभा जेल पर हमलाकर 8-10 बदमाश खालिस्तान लिबरेशन फ्रंट के प्रमुख हरमिंदर सिंह मिंटू समेत छह कैदियों को छुड़ा ले गए।

28 नवम्बर

- सुप्रीम कोर्ट ने सहारा समूह के प्रमुख सुब्रत राय को जेल से बाहर बने रहने के लिए अगले साल छह फरवरी तक सेबी सहारा रिफंड अकाउंट में 600 करोड़ रुपये और जमा कराने के लिए कहा है।

-नोटबंदी के खिलाफ विपक्ष का गुस्सा कल संसद से सड़क तक मुखर रूप से सामने आया।

29 अक्टूबर

- जम्मू के नगरोटा स्थित सेना की 16 वीं कोर के मुख्यालय के समीप अर्टिलरी यूनिट पर पुलिस वर्दी मे आए आतंकियों ने हमला कर दिया। हमला से सेना दो अफसरों समेत सात जांबाज शहीद हो गये।

- करीब साढ़े चार साल बाद महिलाओं के एक समूह ने कल हाजी अली दरगाह के मजार कक्ष के अंदर प्रवेश किया।

30 नवम्बर

- सुप्रीम कोर्ट ने देशभर के सभी सिनेमाघरों में फिल्म के शुरु मे राष्ट्रगान बजाने को कहा।

- न्यूयार्क : चरखे के साथ महात्मा गांधी की 100 तस्वीरों को शामिल किया गया।

दर्द सभी हर लेती

निर्मल गंगा जल सी वाणी,
संकट सब हर लेती
विद्या गुरु की छवि निराली,
वैरागी कर देती
गुरु चरणों में आता जो भी
सम्यक रंग रंग जाता
दुनियाके मिथ्यात्व भूलकर
तत्त्व बोध पा जाता
इनकीमहिमा कुछ ऐसी है
अज्ञान तिमिर हर लेती
गुरु शरण है जग सब अशरण
भटकन सब मिट जाये
आत्म बोध जगे रे अनुपम
ज्ञान निधि मिल जाये
चमत्कार है गुरु मुद्रा में
मोह तिमिर हर लेती
जो भी आया इनके द्वार,
खाली हाथ नहीं जाता
संकट मोचक गुरु मानता,
मन ही मन हर्षाता
विद्यासागर नाम की माला,
दर्द सभी हर लेती

• संस्कार फीचर्स

संस्कार सागर प्रतिनिधि/संवाददाताओं से अपेक्षा - अपने गुरु के प्रति भक्ति की अभिव्यक्ति करने के लिए आप सक्रिय होकर अधिक से अधिक लोगों को संस्कार सागर से जोड़ने का प्रयास करें ़तथा प्रत्येक दरवाजे को अवश्य खटखटायें और संस्कारों के शंखनाद में अपना योगदान सुनिश्चित करें।

अपने आसपास निःशुल्क पथरी दवाई प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें

सुलभ जैन, कुरवाई (म.प्र.)	9893486384
सुरेन्द्र जैन, मथुरा	9412729442
प्रदीप जैन, आरोन (म.प्र.)	9425720763
सुमतिलाल जैन, निंबाहेड़ा	9414832352
नीरज जैन, दिल्ली	9810035356
ज्ञानचंद जैन, आष्टा (म.प्र.)	9926546221
गोपाल लोड़ा, भीलवाड़ा	9829604582
अशोक कंठाली, सुसनेर	98425935470
मुकेश जैन, गाजियाबाद	8439570898
डॉ. प्रतिभा पांडे, औरंगाबाद	9860820784
मुनीश जैन एडवोकेट, मुंबई	9323811455
धन्यकुमार जैन, साबरमति	7874530667
श्रेयांस जैन, अहमदाबाद	9426544317
मीना चौधरी, भोपाल	9827335626
अशोकजी जमादार, दिल्ली	9810210357
मुकेश जैन, ऋषभविहार दिल्ली	9350097678
जवाहरलाल जैन, खंडवा	9424526349
धनकुमार जैन, सीहोर	9425938201
डॉ. प्रदीप जैन, छतरपुर	9424923726
अतुल जैन, दिल्ली	9910059332
अरविंद जैन, मनासा	9425922233
विमलचंद कंजोलिया,झालावाड़ा	9251487922
अजितप्रसाद, सब्जीमंडी दिल्ली	11-35350324
ओमप्रकाशजी, अहमदाबाद	9227411031
श्रीमती ज्योति जैन, खतौली	9412889449
शिखरचंद जैन,टीकमगढ़	9406756564
जिनेन्द्र जैन, सुमेरपुर	9414123025
जय जिनेन्द्र किराना, कटनी	07622-504269

देवेन्द्रकुमार जैन, बीना	9425452825
राजेश मलैया, रहली	9303225656
देवेन्द्रसिंघई, सिलवानी	7898846011
मनोज जैन, भानपुरा	9300383124
छोटे पहलवान, ललितपुर	9451659168
प्रेमनारायण जैन, बरेली	07486-230304
डॉ. गरीबे, कारंजालाड़	9850366891
अशोक जैन, केकड़ी	9214528077
कमल चौधरी, राहतगढ़	9300004458
मनीष जैन, जबलपुर	9425382401
रमेशचंद जैन, सहारनपुर	9761225590
सोमचंदजी, भुलेश्वर मुंबई	022-22013113
सतीश गोहिल, सिरोंज	8978656675
नरेन्द्रकुमार सा.शिरपुर (वाशिम)	8888117177
कनकमल जैन,परतापुर	9929217250
प्रदीपकुमार जैन, आरोन	9425720763
डॉ. नितिनजी, जिंतूर (परभणी)	9552229680
डॉ. प्रशांतकुमार जैन, राघौगढ़	9425045179
नवीनकुमार जैन,खड़गपुर	9474896686
अनमोल ट्रेडर्स, ललितपुर	9450035330
नरेन्द्रकुमारगुलाबशाह,शिरपुर	8888117177
रविन्द्रकुमार जैन, दिल्ली	9312430328
भूपेन्द्र जैन, नवसारी (गुज.)	9275751884
अशोक गंगवाल, रतलाम	9425104612
अरविंद सिंघई, मुंगावली	9425462889
कैलाश जैन, देवास	8962002693
कैलाशचंद जैन, भीलवाड़ा	9828146755
सुनील जैन, सौरई (उ.प्र.)	9935920373

इनके अलावा जिनके नाम अभी छूट गये हैं वह शीघ्र ही सूचित करें जिससे उनका नाम अगले अंक में प्रकाशित हो सके।

इसे भी जानिये

विश्व की जनजातियाँ

एस्किमो – अमरीका के उत्तरपूर्व में स्थित ध्रुव से सटे ग्रीन लैण्ड से पश्चिममें अलास्का तक टुण्ड्रा प्रदेशीय क्षेत्रों में रहने वाले एस्किमो मंगोलॉयड प्रजाति के है । एस्किमो का भूरा रंग एवं पीला चेहरा सपाट और चौड़ा तथा आंखे गहरी कत्थई होती है इनका सिर लम्बा और गालों की हड्डियां ऊंची होती है। ये लोग रण्डियर और कैरिबो की खाल से बने वस्त्र पहनते हैं , ये लोग दो कोट पहनते हैं। पाव में लम्बे जूते, हाथों में दस्ताने और सिर पर फर की टोपी पहनते हैं।

एस्किमो का मुख्य व्यवसाय आखेट है, ये लोग श्वेत भालू, रेण्डियर, कैरिबो, आर्कटिक, खरगोश, सूमरदार जानवर, व्हेल, सील, बालरस, वेगुला, आर्कटिक, उल्लू आदि का शिकार करते हैं , इन्हीं के मांस से अपना पेट भरते है, निवास ग्रह इनका इग्लू बर्फ के टुकड़े से बना होता है। ये रेण्डियर कुत्तों की सहायता से खींचने वाली स्लेज गाड़ी का प्रयोग परिवहन के साधन के रूप में करते हैं। एस्किमो विश्व में अपनी प्रसन्न मुद्रा के लिये विश्व विख्यात है।

खिरगीज – मध्य एशिया में किर्गिस्तान गणराज्य में पामीर उच्चभूमि और ध्यानशान पर्वतमाला के क्षेत्र में खिरगीज निवास करते हैं, ये मंगोल प्रजाति के ह ोते हैं इनकी त्वचा का रंग पीला और बाल काले होते हैं ये कद में छोटे और सुगठित शरीर के होते हैं । इनकी आंखे छोटी व तिरछी होती है और गाल की हड्डियां उभरी होती है ये लोग ऊन व खाल के वस्त्र पहनते हैं पुरुष व स्त्रियां दोनों ही लम्बे कोट पैरों में पुरुष पाजामे व स्त्रियां ऊनो दोडू पहनती है। पुरुष सिर पर टोपी व स्त्रियां सूती दुपट्टा बांधती है।

खिरगीज पशुपालन का व्यवसाय करते हैं । इनका पशुपालन चलवासी है। ये भेड़, बकरिया, गाय, याक घोड़े तथा दो कूवड़ वाले ऊंट पालते हैं। इन पशुओं से प्राप्त दूध, मक्खन, पनीर और मांस से अपना पेट भरते हैं । इनके निवास गृह गोलाकार, तम्बू जैसे होते हैं। जो लकड़ियों क़ा 10-12 मीटर व्यास का ढांचा होता है। इसे खालों से मढकर रहने योग्य बनाते हैं। इस निवास गृह को युर्ट कहते हैं। घोड़े व ऊँट परिवहन में प्रयोग होते हैं।

वर्तमान में आर्थिक व सामाजिक क्रांति के कारण चलवासी पशुपालन के व्यवसाय में इनकी रूचि कम होती जा रही है।

दिशाबोध

संयम

1. आत्म संयम से स्वर्ग प्राप्त होता है, किन्तु असंयत, इन्द्रिय-लिप्सा अपार अंधकारपूर्ण नरक के लिये खुला हुआ राजपथ है।
2. आत्म-संयम की रक्षा अपने खजाने के समान ही करो, क्योंकि उससे बढ़कर इस जीवन में और कोई निधि नहीं है।
3. जो पुरुष समझ-बूझकर अपनी इच्छाओं का दमन करता है, उसे सभी सुखद वरदान प्राप्त होंगे।
4. जिसने अपनी समस्त इच्छाओं को जीत लिया है और जो अपने कर्त्तव्य से पराङ्मुख नहीं होता; वह ऊँचे पहाड़ से भी अधिक उन्नत प्रतीत होता है।
5. संयम सभी को शोभा देता है; पर यह उनको अधिक शोभता है, जिनके ऊपर भाग्यलक्ष्मी मुस्कुराती है।
6. ज़ो मनुष्य अपनी इन्द्रियों को उसी तरह अपने मन में खींचकर रखता है, जिस तरह कछुआ अपने हाथ-पाँव को भीतर छिपा लेता है; उसने अपने समस्त आगामी जन्मों के लिये खजाना जमा कर रखा है।
7. और किसी को चाहे तुम मत रोको, पर अपनी जिह्वा को अवश्य लगाम लगाओ; क्योंकि बेलगाम की जिह्वा बहुत दुःख देती है।
8. यदि तुम्हारे एक शब्द से भी किसी को कष्ट पहुँचता है, तो तुम अपनी सब भलाई नष्ट समझो।
9. आग का जला हुआ तो समय पाकर अच्छा हो जाता है, परन्तु वचन का घाव सदा हरा बना रहता है।
10. उस मनुष्य को देखो जिसने विद्या और बुद्धि प्राप्त कर ली है, जिसका मन शान्त और पूर्णतः वश में है; धार्मिकता तथा अन्य सब प्रकार की भलाईयाँ उसके घर उसका दर्शन करने के लिये आती है।

विरसत हस्तान्तरित करने के पाँच सूत्र

• आगमवेत्ता साध्वी वैभवश्री 'आत्मा' •

हर व्यक्ति विरासत में बहुत कुछ प्राप्त करता है - नाम, वंशावली, गौत्र, जाति, सम्प्रदाय, रिश्ते-नाते, जमीन-जायदाद, सभ्यता-संस्कृति, धर्म व आध्यात्मिक मूल्ययुक्त शिक्षाएँ, कई बार तो सोच, दृष्टिकोण, मानसिकताएँ व आदतें भी।

सवाल यह है कि क्या हम अपनी धरोहर व विरासत को आगे हस्तान्तरित कर पा रहे हैं ? कहीं ऐसा तो नहीं कि हमारे पिता-पितामह ने समाज के विकास के लिए जो धर्म स्थानक, मंदिर, गुरुद्वारा इत्यादि लोक कल्याणकारी केन्द्र बनाए, हमारी वर्तमान व आगामी पीढ़ी उन सबसे दूर-दूर रह रही है। ऐसा लगता है मानो, ये सब चीजें उन्हें बकवास लगती है (wastage of time and money) लगती है। विरासत में प्राप्त इन रिवाजों को वह दकियानूसी समझती है । हम माने न मानें स्थितियाँ लगभग ऐसी ही है। इस ज्वलंत प्रश्न को लेकर समाज की बुजुर्ग पीढ़ी चिंतित नजर आती है। कुछ निराश जन तो यहाँ तक कह भी देते हैं । जब तक हम हैं तब तक ये संस्थाएँ हैं, धार्मिक व सामाजिक रीति-रिवाज हैं। हमारे जाने के बाद किसी को इनके लिए फुर्सत ही नहीं होगी । फिर इन रिवाजों व संस्कारों का क्या हश्र होगा, कौन जानें, कोई इस ओर झांकेगा भी ? इस चिन्ता का कारण युवा पीढ़ी में बढ़ती जा रही दिशा-हीनता व मूल्यहीनता भी है।

इस समस्या का लेकर कुछ एक बिन्दुओं पर हम विमर्श करें ताकि प्रौढ़ वर्ग कुछ उपाय दृष्टि अपना सकें। सांस्कृतिक धरोहर को हस्तांतरित करने के लिए प्रभावी उपायों के रूप में निम्न उपाय अपनाए जा सकते हैं-

1. अपने पुरातन रीति-रिवाजों के औचित्य को बताने की क्षमता रखना- यदि आप विरासत से प्राप्त सेवा, दान, धर्म-कर्म के संस्कारों को भावी पीढ़ी में हस्तांतरित करना चाहते हो तो उन्हें कभी किसी पर थोपे नहीं। उन्हें आग्रह न करें। हो सकें तो स्वयं उनका औचित्य जानें, समझे व उनके सामने रखे । अगर आपने उन रिवाजों को अपनाकर जीवन में कुछ अच्छा अनुभव पाया हो तो उसे प्रभावी तरीके से नई पीढ़ी के साथ बाँटे । कदाचित बुरा अनुभव पाया हो तो, उसे सुधारकर प्रस्तुत करे। जैसे ही आपके द्वारा दिए गए दान का गलत इस्तेमाल हुआ हो तो, इसे आगे शेयर करते समय कहो कि दान देना गलत नही हैं किन्तु सही तरीके से दिया जाना जरूरी है। जरूरतमंद को दिया जाए, मानव सेवा के लिए दिया जाए, शिक्षा व स्वास्थ्य की वृद्धि के लिए दान, सहयोग हो । यह तो एक उदाहरण है,हकीकत में ऐसे अनेक मुद्दों पर बात करते समय हृदय का विश्वास, प्रेम व सकारात्मकता आगे हस्तांतरित होती जाएगी।

2. विश्वासोत्पादक तरीका अपनाएँ - आज भी हम किसी के श्रद्धा-विश्वास से घटित चमत्कारों को सुनते हैं तो प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। अतः हो सके तो अपनी बातों को विश्वासोत्पादक तरीके से कहो । बात चाहे जैसी भी हो, उसे किसी के दिल-दिमाग में उतारने के लिए आपका निजी अनुभव व विश्वास का बल बहुत महत्व रखता है। अगर अपनी विरासत को, संस्कृति को, सांस्कृतिक मूल्यों को नई पीढ़ी में पहुंचाना है तो इस बात की चिंता न करो कि वे इन बातों को तुरंत मानें ही या अनुकरण (follow) करे ही। आप तो अपनी आस्था, प्रेम व संस्कृति की महिमा को कह भर दो, बाकी का काम आपका विश्वास करेगा। अगर आप में श्रद्धा, विश्वास है तो वह स्वतः दूरगामी परिणाम लाएगा।

3. कथा दृष्टान्त कहना न भूलें - अपने प्राचीन मूल्यों को कथा-दृष्टान्तों के माध्यम से व्यक्त करें । प्राचीन काल से लोक मानस पर सर्वाधिक प्रभाव दंतकथाओं का रहा है। जो दादी-नानी की जुबानी सुनाई जाती रही हैं, वे आबाल-वृद्ध सबको प्रभावित करती ही हैं । अपने घर-परिवार के बुजुर्गों की यशोगाथा हो, चाहे धर्म व कर्म क्षेत्र के धुरंधर विद्वानों व कर्मयोगियों की या देशभक्त वीर बहादुरों की हो। आज तकनीकी व प्रौद्योगिकी के युग में इन कथाओं को, ऐतिहासिक घटनाक्रमों को फिल्मों व धारावाहिकों के माध्यम से, कार्टून शो व चित्रावलियों के माध्यम से जितना प्रसारित किया जाएगा, उतनी ही हमारी भावी पीढ़ी विरासत की महिमा समझ पाएगी। सांस्कृतिक मूल्यों की महत्ता उसके जेहन में अंकित हो पाएगी। कई लोगों ने ऐसा करना प्रारम्भ किया भी है । ऐसी अनेक फिल्में व धारावाहिक बहुत प्रसिद्ध हुए हैं जो ऐतिहासिक कथ्यों व तथ्यों को व्याख्यायित करती हैं। भगवान शिव, राम, कृष्ण, बुद्ध, महाराणा प्रताप, शिवाजी आदि अनेक महापुरुषों को रंगमंच से नई पीढ़ी में पहचान प्राप्त हो चुकी है। किन्तु इस संदर्भ में जैन धर्म व समाज के लोग इस पर्दे पर एक सांस्कृतिक व ऐतिहासिक महिमाशाली पहचान नहीं बना पाए हैं। विश्व का बहुत बड़ा हिस्सा प्रभु ऋषभ से महावीर तक की धर्म संस्कृति से, उनके नामों से अनभिज्ञ है, अछूता है । पुरातन वादी लोग नहीं चाहते कि जैन कथाएँ किन्हीं पात्रों पर फिल्माई जाए और वे अपनी सीमित सोच को अनेक तर्कों से सिद्ध करने में जुटे रहते हैं। आज के युग में गर हम ऐतिहासिक कथा-कथानकों को यू-टयूब, फेसबु क, ट्विटर आदि प्लेटफार्म पर पेश करेंगे तो हर नवयुवक उसके द्वारा अपनी सांस्कृतिक धरोहर को ग्रहण कर पाएगा । क्योंकि आज की न्यूक्लियर फेमिली में दादी-नानी की कहानियाँ न तो सुनी जातीहै, न सुनई जाती है। किन्तु इंटरनेट पर सभी जुड़े हुए हैं । इन माध्यमों के द्वारा ही बच्चों व युवाओं को हम नैतिक मूल्यों की जानकारी भी दे सकते हैं।

4. उत्सव मनाना – जिन पर्वों व त्यौहारों को उत्सव के रूप में मनाया जाता है, वे सदियों-सदियों तक अपनी महत्ता बनाए रख पाते हैं। भारत भर में ऐसे अनेक पर्व व त्यौहार है, जो सम्पूर्ण देश में उत्साह के साथ, रीति-रिवाजों के साथ मनाए जाते हैं, जैसे- होली, दीपावली, दशहरा, राखी, भैया दूज इत्यादि। कई पर्व प्रांतीय व राज्य स्तर पर मनाए जातेहैं। जिस सांस्कृति क धरोहर को सुरक्षित रखना हो व हस्तांतरित करना हो, उसे उत्सव के रूप में अवश्य मनाओ।हंसी-खुशी के माहौल को भला कौन पसंद नहीं करेगा।

5. प्रशिक्षण – जिन बातों को आगामी पीढ़ी में हस्तांतरित करना हो, उनका शिक्षण-प्रशिक्षण भी होना चाहिए। इससे नया संवाहक वर्ग तैयार किया जा सकेगा। जिस प्रकार पिता व दादा के साथ दुकान पर बचपन से ही बैठने वाला बालक बड़ा होते-होते अच्छा व्यापारी बन जाता है, उसी प्रकार जिन अच्छी व महत्वपूर्ण बातों को हमें नई पीढ़ी तक पहुँचाना है, उसके लिए शिविर, कार्यशालाएं, सेमिनार, क्लासेस आदि लगाना चाहिए। बाल्यकाल में सीखी गई बातें सुदीर्घ समय तक साथ चलती है। युवावस्था में कुछ नया सीखना हो तो बिना लॉजिक जाने सीखना मुश्किल है किन्तु वे ही बातें बचपन में अनुकरण मात्र से सीख ली जाती हैं। अतः बच्चों को बुजुर्गों के पास बैठना व सुनना चाहिए। कई चीजें देखकर व सुनकर हमारे भीतर चली आती हैं, उन्हें सीखने के लिए अलग से कुछ व्यवस्थाएँ नहीं करनी पड़ती है। फिर भी विद्यालयों व महाविद्यालयों के द्वारा जब पुरातन विधाओं व कलाओं के लिए सत्र लगाए जाते हैं, तब प्राचीन मूल्य हर पीढ़ी में अर्थवत्ता प्राप्त कर पाते हैं।

संस्कारों की इस विरासत को हस्तांतरित करने के लिए चिन्ता छोड़कर चिन्तन करना आवश्यक है, साथ ही समय गँवाए बिना efforts की आवश्यकता है। बुजुर्ग व प्रौढ़ पीढ़ी की यह महत्ती जिम्मेदारी है कि वह आगामी पीढ़ी के सर्वांगीण विकास के लिए ठोस कदम उठाएँ व अपनी कार्यप्रणाली व सोच में कुछ परिवर्तन स्वीकार करें। ■

संस्कार सागर के सभी प्रतिनिधि/संवाददाताओं से अपेक्षा – अपने युगश्रेष्ठ गुरु के प्रति भक्ति की अभिव्यक्ति हेतु आप सक्रिय होकर अधिक से अधिक लोगों को संस्कार सागर से जोड़ने का प्रयास करें तथा प्रत्येक दरवाजे को अवश्य खटखटायें और संस्कारों के उन्नयन में अपना योगदान दें।

आह्वान – उत्साही युवा इस पत्रिका के प्रतिनिधि संवाददाता बनकर **संस्कार जागरण यज्ञ** में अपनी धर्मानुरागी, रूचि दिखायें।

ऐलक सिद्धांतसागर — क़हानी

चुनाव नीति

महरौनी में चुनाव का वातावरण बहुत चरम पर पहुँच चुका था। चारों ओर सडक बैनरों से अटी पटी थी। सुबह होते ही प्रत्याशी अपने चुनाव सम्पर्क में निकल पड़ते थे। नगर की शांति भंग करने का कार्य प्रभात बेला से ही प्रारंभ हो जाता था। नारेबाजी, चुनावी रैलियां निकलने का सिलसिला रात तक भी खत्म नहीं होता था। चाय और पान की दुकानों पर नुक्कड़ सभा सतत् जारी रहती थी। चाय की दुकानों पर लगी बैंचों पर लोग बैठकर अपनी-अपनी बात कहते थे। कभी-कभी चाय के दुकानदार भी उनकी चर्चाओं में अपनी हिस्सेदारी भी बना लेते थे। दुकान पर चाय तो खूब बिकती थी परन्तु कभी लोग वाक्‌युद्ध के बीच में ही हाथापाई की नौबत आ जाती थी। अकारण ही पक्ष की बात करते करते ही लोग अपनी आपसी खुन्नस निकालने लगते थे। पुलिस व्यवस्था बहुत चुस्त होने के बावजूद भी रोज झड़पों क़ी रिपोर्ट कोतवाली में आती थी। प्रशासन के लिए चुनाव सिरदर्द ही रहता था। चुनाव आयोग के निर्देशानुसार व्यवस्था बनाना उत्तरप्रदेश में एक कठिन ही काम होता है। चुनाव आचार संहिता की धज्जियां किस चौराहे पर कौन सा दल कब उड़ा दे इसका कोई भरोसा नहीं रहता है। यहां चुनाव धन-बल, बाहुबल का प्रयोग करके ही सम्पन्न होते है। कानून के हाथ बहुत लम्बे होते हैं। यह सच है परन्तु कानून को उत्तर प्रदेश के छुटभैय्या नैता अंधा मानते हैं। पुलिस प्रशासन के संरक्षण में अपराधी तत्व अराजकता फैलाने में भी कभी पीछे नहीं रहते हैं। चुनाव में हर तरफ भय का वातावरण बना रहता है। नैतिकता चुनाव के समय किसी कौने बैठकर आंसू बहाती नजर आती है। छल-कपट आपसी घात प्रतिघात के दाँव पेच इतने खतरनाक होते हैं कि इन्हें समझना ही कठिन होता है। चुनाव की आपराधिक गतिविधियां कभी भी अपनी हदें उलांघने के लिए आतुर रहती है। यह नगर पंचायत के इस चुनाव का प्रतिष्ठा बिन्दू जैन समाज के बीच में भी बन चुका था।

महरौनी में काफी बड़ी मात्रा में ज़ैन समाज

है। इस समाज में पार्टी बाजी चलना वर्षों की परम्परा है। सिंघईवाद और मलैयावाद तो कभी सराफवाद भी चरम पर चलता रहा है। धर्म के नाम जरूर समाज सभी एकत्रित हो जाता है। यहां पर तीर्थ क्षेत्र भी जिसे सर्वतोभद्र तीर्थ कहते हैं। इस तीर्थ के नाम पर लगभग 42 एकड़ जमीन का रकबा है। साथ ही सन् 1956 से शान्ति निकेतन इंटर कालेज विद्यालय भी संचालित होता रहा है जिसके केन्द्र में विवाद विरासत में मिला है। अहं स्वार्थ की लड़ाई धर्म प्रभावना में कभी बाधक नहीं बनती फिर भी असंगत विसंगत घटना होती रहती है जिससे देव शास्त्र गुरु की गंभरी अविनय भी हो जाती है जिससे कर्म बंध कितना बड़ा हो सकता है इसका अनुमान लगाना बहुत कठिन होता है। यहाँ के लोगो कों यह खबर नहीं होती है वे क्या कर रहे हैं। वे यह तो कहते देखे जाते है कि कर्म किसी को नहीं छोड़ते है। कर्म का फल सभी को भोगना पड़ता है। वर्तमान महरौनी की समाज में परिवर्तन जरूर आया है।अब कषाय की स्थिति कैसी है यह कहना बहुत मुश्किल ही है। संत समागम का प्रभाव इतना अवश्य हुआ है कि चारों जिनालयों पुजारियों की संख्या काफी बढ़ चुकी है। हर मंदिर में धार्मिक क्रिया सामूहिक रूप से होने लगी है। पूजा पाठ करने में लोगों का मन भले ही लगने लगा हो परन्तु यह नहीं कहा जा सकता है कि विचार भावना में नीति और नियत में कोई ज्यादा अंतर आया है।

एक सुबह ऐसी भी हुई जब आसमान में तारे एक-एक करके अदृश्य हो रहे थे। चिड़िया अपनी चहक से वातावरण को मनोरम बना रही थीं पौ फट चुकी थी। लालिमा धीरे-धीरे सूर्य महाराज के आगमन की सूचना देना शुरु कर रही थी। माली अपने काम से लग चुका था। कपूरचंद माली ने मंदिर के पट खोले और सबेरे पहले अपना झाडू उठाया और सफाई अभियान प्रारंभ कर दिया। मंदिर के मुख्य द्वार से काफी दूर चला गया उसे यह ध्यान रहे न रहे मंदिर में कौन आ रहा है, फिर भी वह यह अवश्य देख लेता था कि कोई भी अवांछनीय तत्त्व तो प्रवेश नहीं कर रहा है। आज भी अपनी चौकन्नी नजर में चूक नहीं कर रहा था किन्तु उसे अपने नित्य कर्म से निपटने तो जाना ही था तो वह बेफिक्र होकर गया था क्योंकि मंदिर में एक दो भक्त आ ही गये थे। मंदिर के बाहर चबूतरा के सामने भी एक दो लोग रोज की भांति बैठ चुके थे। कपूरचंद भी उनके साथ बैठकर अपनी थकान उतार रहा था इतने में ही पुजारी की आवाज आयी बागवान कहाँ बैठे हो इधर आओ।

कपूरचंद भीतर गया बोला - ''कयाय का कैरये रटा हो, कायखो आ चिल्ला रय हो, का हो गव।''

पूजारी - 7 नं. वेदी के 4 श्रीजी नइयां कहाँ चले गये।

कपूरचंद- ''उतई हुईयें, ऐसे का कोऊ भगवान आ ले जा सकत है?''

पुजारी - 'अरे भैय्या तोय तो मेरी बात को विश्वास नइया हो ते खुदई देख ले।'

शिखरचंद चौधरी ने कहा पुजारी जी क्या हो गया हमें बताव पुजारी ने कहा ''दादाजी 7 नं. वेदी के 4 श्रीवेदी पे नइआ।'' शिखरचंद रोज का प्रक्षाल करने वालों में से एक उन्होंने ध्यान से देखा सचमुच में वेदी 4 श्रीजी नहीं थे उन्होंने ये तो मंदिर की चोरी हो गई। शिखरचंद चौधरी ने अपने धोती दुपट्टा बदलने के लिए वे घर गये और सीधे सिंघई मथुरादास के घर की ओर जाने लगे इतने में उन्होंने देखा कि मथुरादास जी खुद चले आ रहे हैं उन्होंने मथुरादास जी से कहा - अरे 'सिंघई चलो लौट चलो अपन को जल्दी कोतवाली चलना पड़ेगा।'

'क्यों चौधरी जी क्या बात हो गई। इतने सुबह से तुम्हारा किससे झगड़ा हो गया।'

चौधरी जी ने कहा - 'अरे मेरा किससे झगड़ा होगा ? रात मंदिर में चोरी हो गई।'

'क्या कह रहे हो मंदिर में चोरी हो गई, गोलक तोड़ दी क्या चोरो ने ?'

चौधरी जी ने कहा - 'नही भाई 7 नं. वेदी के 4 श्रीजी गायब हो गये हैं। चलो जल्दी कोतवाली रिपोर्ट लिखवाना पड़ेगी। जैन समाज के मुखिया सिंघई मथुरादास के साथ आठ-दस लोग मिलकर कोतवाली पहुँचे।'

दरोगा सम्पतलाल ने कहा- 'कहिये सेठ जी सुबह सुबह आप सब लोग कैसे पधारे ? मथुरादास ने कहा - कि 'हमारे 1008 श्री दिगम्बर जैन मंदिर से 4 मूर्तियां चोरी चली गई है।' सम्पत लाल ने कहा कि आप मूर्ति चौरी की रिपोर्ट लिखवा दो और हम तुरन्त कोतवाल साहब के पास जा कर रिपोर्ट लिखवाकर उन्हें सूचना देकर आते हैं। सम्पतलाल की सूचना पर कोतवाल साहब कोतवाली में तुरंत आ गये और उन्होंने अपनी कुर्सी संभालते हुये मथुरादास से कहा कि आप बतायें चोरी कितने बजे हुई ? मथुरादास से कहा कि यह बात तो हम निश्चित तौर पर नहीं कह सकते हैं। इसका मुआयना आप स्वयं करके अपनी जांच में दें। कोतवाल विजयसिंह परिहार अपनी एक चार की गार्ड के साथ गाड़िया लेकर जैन मंदिर आ गये तथा वायरलेस से पुलिस अधीक्षक को जनरल चोरी की सूचना दी। सांय सांय करती पुलिस की गाड़िया दिगम्बर जैन मंदिर के पास पहुँची। अपने जूते, मोजे उतार कर विजयसिंह परिहार ने मौका मुआयना किया। सबसे पहले उन्होंने उस वेदी को देखा जहाँ से 4 मूर्तियां चोरी गई थी। तब विजयसिंह परिहार ने एक घंटे का मौका मुआयना करने के बाद यह बात समझ में नहीं आ रही थी कि चोर मंदिर में घुसे कहाँ से है। उन्होंने एक घंटे का समय लगाने के बाद कपूरचंद माली को बुलाकर पूछताछ शुरु की - 'तेरा नाम क्या है ?' उसने कहा - 'कपूरचंद है।' 'तू यहाँ पर कितने साल से काम कर रहा है ?' 'साहब, हमें पता नही हैं लेकिन यहाँ पर मेरी चार पीढ़ी से काम कर रही है। हमारे पिताजी और उनके पिताजी सभी यहां पैदा हुये और इसी मंदिर में खेलकूद के बड़े हुये।'

'अच्छा ये बता कि तुमने कितने बजे मंदिर खोला ?जब मंदिर खोला उस समय कोई ताले वगैरह टूटे नहीं थे ?'

कपूरचंद ने कहा 'साहब मैंने रोज की तरह

काम करते हुये झाडू लगाकर अपने काम से चला गया। जब में लौटकर आया तब पुजारी ने हमसे कहा कि बागवान 7 नं. वेदी से 4 श्रीजी गायब है । तब मैंने वेदी पर जाकर देखा तब पाया कि वेदी पर 4 श्रीजी नहीं है।

विजयसिंह परिहार ने कहा कि, थोड़ी देर बाद कप्तान साह आने वाले हैं। और ये तुम समझ लेना कि चोरी करने वाला व्यक्ति भीतर का ही है या तो वह हमें खुद ही बता दे अथवा हम खुद ही पता लगा लेंगे।

जब हम पता लगायेंगे तब उसके साथ में क्या व्यवहार करुंगा वह तुम लोग खुद ही समझ सकते हो। यह चोरी साढ़े चार से साढ़े पांच बजे के बीच की है। मैं जा रहा हूँ। चम्पालाल तुम यहीं पर कुर्सी डालकर बैठो। मैं अन्तरिम व्यवस्था बनाकर आता हूँ।

विजयसिंह के जाने के बाद मंदिर के अंदर और बाहर सभी जगह चर्चायें होती रही। आपस में भी गर्मागमी होती रही। आरोप-प्रत्यारोप की झड़ी जारी रही।

पुलिस अधिकारियों ने अपने शक का केन्द्र कपूरचंद्र माली को बनाया। उससे समय-समय पर पूछताछ करने तथा उसे रोज थाने बुलाने लगे। समाज माली के पक्ष में थी जैन समाज एक सुर में कहने लगे की हमारा माली कभी भी ऐसी हरकत नहीं कर सकता है।

एक दिन मालिन को देवता भर आये और वह सच उगलने लगी उसने कहा- तुम पुलिस वाले जबरन माली पर शक कर रहे हो। भगवान किसने कहाँ रखे हैं मैं बताती हूँ। मालिन के सिर पर उसकी सास स्वयं आती थी उसने बलताया सीढ़ियों के पीछे जो आला है उसमें चारों भगवान रखे है। माली और समाज के लोग सीढियों के पीछे आले को देखा तो मालूम चला कि भगवान की चारों मूर्तियां वही मिल गई मूर्तियां के मिलते ही लोगों में खुशी की लहर दौड़ गई। बहुत लोगों ने संतोष किया चलो अपने तो भगवान मिल गये अब मामला यही समाप्त कर दिया जाये परन्तु कुछ लोग मूर्ति चोरी के तथ्यों को खोजने में लगे रहे।

जैन समाज के मुखिया ने भी पता लगाया कि आखिर भगवान को इधर उधर करने वाला कौन है तब कुछ लोगों ने अपराध स्वीकार किया और कहा कि हम लोगों ने समाज एकत्रित नहीं हो पा रही थी चुनाव जीतना था अतःयह रास्ता चुना। किया तो हमने बड़ा पाप है एक दो दिन बाद जब वोट डल जाते उसके बाद हम भगवान से क्षमा याचना करके वहीं विराजान कर देते,परन्तु क्या करे मालिन बहु ने हम लोगों की पूरी चुनाव नीति को असफल कर दिया।

मुखिया मथुरादास ने कहा - ऐसी योजना आप लोगों को नहीं बनाना चाहिए, आप लोगों को नहीं मालूम कि सती अंजना ने अपने पूर्व भव में भगवान की मूर्ति को कुछैक घड़ी के लिए पानी में डूबोया था उसका फल उन्हें 22वर्ष जंगल में रहकर कष्ट सहना पड़ा था। यह बहुत बड़ा पाप है। चुनाव तो 5 साल में आना तो क्या अपनी ऐसी ही चुनाव नीति बनायेंगे। इससे बहुत बड़े पाप केसागर में डूब जायेंगे। हमें अपने छोटे से स्वार्थ के लिए इतना बड़ा पाप नहीं करना चाहिए। ■

जैन दर्शन में वर्णित अकालमरण की सैद्धांतिक विवेचना

• पं. संजीव शास्त्री, महरौनी, ललितपुर •

संसार का प्रत्येक प्राणी जन्म-मरण के चक्र में निरन्तर चक्कर लगाता रहता है। दार्शनिकों ने जन्म के साथ-साथ मरण को भी परिभाषित करने का प्रयास किया है। जैन दर्शन ने तो मरण के सम्बन्ध में गहन विश्लेषण करके इसके गूढ़ रहस्य को उद्घाटित किया है। जैनाचार्यों ने मरण को परिभाषित करने के साथ-साथ अनुयोगों के आलोक में मरण के नामान्तर मरण के प्रकार, मरण के स्वरूप, मृत्यु महोत्सव आदि को अनेक विध व्याख्यायित भी किया है।

'अकालमरण' जैनदर्शन की एक विशिष्ट अवधारणा, दार्शनिक मत है। पूज्यवर जैनाचार्यों ने अकालमरण के लक्षण, परिभाषा स्वरूप, अकालमरण के स्वामी, गुणस्थानापेक्षा अकालमरण सिद्धि, गति के सापेक्ष अकालमरण की स्थिति आदि का स्पष्ट विवेचन किया है। अतः माँ जिनवाणी की शरण में आकर ही अकालमरण की अवधारणा को भलिभांति, प्रामाणिक रूप में समझा जा सकता है।

लोकप्रसिद्ध मरण तद्भव मरण कहलाता है। और प्रतिक्षण आयु का क्षीण होना नित्य मरण कहलाता है। यद्यपि संसार में सभी जीव मरणधर्मी है, परन्तु अज्ञानियों की मृत्यु बालमरण और ज्ञानियों की मृत्यु पण्डित मरण है, क्योंकि शरीर द्वारा जीवन का त्याग किया जाने से अज्ञानियों की मृत्यु होती है और जीव द्वारा शरीर का त्याग किया जाने से ज्ञानियों की मृत्यु होती है।जैन दर्शन में आयु का क्षय ही वास्तविक मरण है।

अकालमरण के सम्यक् स्वरूप से परिचित होने के लिए कर्मों की अवस्थाओं उदय, उदीरणा, उपशम, क्षय आदि की जानकारी होना अत्यावश्यक है। अतः यहाँ उदय उदीरणा को विशेष रूप से समझने का प्रयास करना चाहिए।

उदय - क्रम से उदय में आकर कर्मों के फल देने को उदय कहते हैं। कर्मों के फल भोगने के काल को उदय कहते हैं।

उदीरणा - अपक्व कर्मों के पाचन को उदीरणा कहते हैं। दीर्घकाल पीछे उदय आने वाले योग्य अग्रिम निषेकों को आकर्षण देकर अल्पस्थिति वाले अधस्तन निषेकों में या उदयावली में देकर उदयमुख रूप से उनका अनुभव कर लेने पर वह कर्म स्कन्ध कर्म रूप को छोड़कर अन्य पुद्गल रूप से परिणमन कर जाता है। (प.सं./प्रा.टी.3/47/5)

कर्म सिद्धांत के अनुसार जिन कर्मों का उदय जहाँ-जहाँ तक होता है उनकी उदीरणा वहाँ-वहाँ होती है लेकिन सातावेदनीय, असातावेदनीय एवं आयु कर्म इसके अपवाद है। आयु कर्म

का उदय तो चौदहवें गुणस्थान तक है लेकिन इसकी उदीरणा छठवे गुणस्थान तक ही होती है । आयु कर्म की विशेष उदीरणा, अकालमरण मनुष्यायु की अपेक्षा छठवे गुणस्थान तक एवं तिर्यञ्चायु की अपेक्षा पांचवे गुण तक होती है । आयु कर्म की सामान्य उदीरणा तो प्रतिसमय होती रहती है । विशेष उदीरणा में आयु कर्म के शशेष समस्त निषेक उसी प्रकार क्षरण को प्राप्त हो जाते हैं जिस प्रकार प्रस्तर (पत्थर) के घात से कुम्भ अर्थात् मटका फूट जाने पर उसका पानी एक साथ बाहर फैल जाता है, केले के पेड़ पर घात करने पर वह सम्पूर्ण रूप से धाराशायी हो जाता है । अतः कारण विशेष के मिलने पर आयु कर्म के निषेकों का एक साथ एक समय में उदीरित हो जाना अकालमरण है ।

अकालमरण की सिद्धि में तत्वार्थसूत्र कर्ता पूज्य उमास्वामी का मत -

औपपादिक चरमोत्तमदेहासंख्येय-वर्षा-युषोऽनपवर्त्या युषः ।

-2/53, तत्वार्थ सूत्र

उपवाद जन्मवाले, चरमोत्तम देहवाले और असंख्यात वर्ष की आयु वाले जीव अनपवर्त्य आयु वाले होते हैं। उपवाद जन्म वाले देव व नारकी हैं। चरम शब्द अन्त्यवाची है। उत्तम शब्द का अर्थ उत्कृष्ट है। जिनका शरीर चरम होकर उत्तम है वे चरमोत्तम देह वाले कहे जाते है।

जिनका संसार निकट है अर्थात् उसी भाव से मोक्ष प्राप्त होने वाले जीव चरमोत्तम देव वाले कहलाते हैं। उत्तर कुरु आदि में उत्पन्न हुए तिर्यंच और मनुष्य असंख्यात वर्ष की आयु वाले कहलाते हैं।

अपवर्त्य/अपनवर्त्य-

बाह्यस्योपघातनिमितस्य विषशस्त्रादेः संनिधाने ह्रस्वं भवतीत्यपवर्त्यम्। अपवर्त्य-मायुर्येषां त इमे अपवर्त्यायुषः । न अपवर्त्यायुषः अनपवर्त्यायुषः । न ह्येषमौपपादिका दीनां बाह्यनिमित्तवशादा-/युरपवर्त्यतेइत्ययं नियमः । इतरेषामानयमः । सवार्थसिद्धि

(आ.पूज्यपाद) 2/53 टीका

सूत्र का विशेष आशय इस प्रकार है -

भुज्यमान आयु का उत्कर्षण नहीं होता, केवल उदीरणा होकर आयु घट सकती है, उपर्युक्त सूत्र इस सिद्धि हेतु है कि यह नियम सभी संसारी जीवों में घटित नहीं होता अपितु इसमें अपवाद है। औपपादिक आदि को जो आयु प्राप्त होती है उसका पूरा भोग होकर ही पर्याय का अन्त होता है।यह विशेष नियम करने का कारण यह है कि कर्म सिद्धांत के अनुसार निकाचन, निधति और उपशम करण का प्राप्त कर्म को छोड़कर अन्य कोई भी अधिक स्थिति वाला कर्म अभयरूप (अन्तरंग-कर्मोदय+बहिरंग-नोकर्म (शरीरादि) कारण विशेष के मिलने पर अल्पकाल में भोगा जा सकता है। भुज्यमान आयु पर भी यह नियम लागू होता है, इसलिए यह व्यवस्ता दी गयी कि भुज्यमान आयु पर यह नियम औपपादिक नरमोत्तम.... इस सूत्र में आये जीवों पर

लागू नहीं होता। इन जीवों के प्रथम समय में आयु के जितने निषेक होते हैं वे क्रम से एक-एक निषेक उदय में आकर के निर्जरा को प्राप्त होते हैं। इनका विषादि से घात नहीं होता।

पर इसका आशय यह नहीं है कि सूत्र में आये इन जीवों के आयु कर्म की उदीरणा न होती होगी।

इनके (औपपादिक आदि के) उदीरणा का होना तो सम्भव है पर निषेक (अल्पघात/अल्पवायु) न होकर ही यह उदीरणा होता है। स्थितिघात न होने से अभिप्राय है कि इनके पूरे निषेकों का उदीरणा द्वारा क्षय नहीं होता।

राजवार्तिक में चरमदेह और उत्तम देह ऐसा अलग-अलग अर्थ किया गया है किन्तु बाद में उत्तम देह वाले चक्रधर आदि के शरीर को अपवर्त्य आयु वाला बतलाकर उत्तम शब्द को चरम देह का ही विशेषण मान लिया है।

अकालमरण (कदलीघात) के कारण-

आचार्यकुंदकुनद महाराज लिखते हैं कि विष खा लेने से, वेदना से, रक्त का क्षयहोने से तीव्र भय से शस्त्रघात से संक्लेश की अधिकता से, आहार और श्वासोच्छवास के रुक जाने से आयु क्षीण हो जाती है। इस प्रकार के मरण को धवल जी एवं गोम्मटसार कर्मकाण्ड जी ग्रंथ में कदलीघात उपमा दी गयी है।

(ध.1/1, 1.1गा. 12/23, गो.कि./मू. 57/55

भावपाहुड़ जी में आचार्य कुन्दकुन्द जी अकालमरण के और भी लक्षण लिखते हैं जैसे-

हिमजलण सलिलगुरु पर पव्वयतरु रुहण पडणभगेहिं।
रसविज्जजोयधारण अणयपसंगेहि विविहेहिं।। भा.पा. 26

अकालमरण का अस्तित्व अवश्य है -

जैसे पयाल आदि के द्वारा आम आदि को समय से पहले ही पका दिया जाता है, उसी तरह निश्चित मरणकाल से पहले भी उदीरणा के कारणों से आयु का अपवर्तन हो जाता है।

रा.वा./2/53/10/158

जिस प्रकार गीला कपड़ा फैला देने पर जल्दी सूख जाता है उसी प्रकार बाह्य निमित्तों से समय से पूर्व आयु के निषेक झड़ जाते हैं। यही अकाल मृत्यु है।

रा.वा./2/53 टीका (आ. अकलंकदेव)

श्लोकवातिर्क में भी लिखा है-

न हि अप्राप्तकालस्य मरणाभावः खड्ग प्रहारा दिभिः मरणस्य दर्शनात्।

- श्लोकवा. 5/2/53/2/261/16

कदलीघात से मरने वाले जीवों का आयुस्थिति के अंतिम समय में मरण नहीं हो सकने से मरण और आयु के अंतिम समय का समानाधिकरण नहीं है।

ध. 13/5,5,63/334/1

अकालमरण को केवली भगवान भी अकालमरण के रूप में जानते हैं। इसलिए केवली के द्वारा भी अकालमरण का अस्तित्व है।

अकालमृत्यु की सिद्धि में हेतु

आयुर्वेदशास्त्र में अकालमृत्यु के वारण के लिए औषधि प्रयोग बताये गये हैं । यदि अकालमृत्यु न मानी जाए तो रसायनादि का उपदेश व्यर्थ हो जायेगा।

रा.वा./2/53/11/158/12

सल्लेखना अकालमरण नहीं है-

आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने सल्लेखना का स्वरूप प्रतिपादित करते हुए लिखा है कि -

उपसर्गे दुर्भिक्षे जरस रूजायां च निःप्रतीकारे।

धर्माये तनुविमोचनमाहुः सल्लेखनामार्याः ।। रत्नकरण्डश्रावकाचार, 122

सल्लेखना की आवश्यकता -

अन्तःक्रियाधिकरणं तपः फलं सकलदर्शिनः स्तुवते।

तस्माद्यावद्विभवं समाधिमरणे प्रयतित्वयम् ।। रत्नकरण्डश्रावकाचार, 123

उपर्युक्त दोनों श्लोक से सल्लेखना की आवश्यकता एवं उसके लक्षण भलीभांति ज्ञात हो जाते हैं। तुलनात्मक अध्ययन से हम पाते हैं कि सल्लेखना में अकालमरण के कारणों में से कोई भी कारण नहीं पाया जाता। अतः सल्लेखना अकालमरण नहीं अपितु भजनीय है।

अर्हन्त से सिद्ध होने में अकालमरण नहीं -

यह तो कर्म सिद्धांत से ही सिद्ध है कि अर्हन्त से सिद्ध होना अकालमरण नहीं है, क्योंकि मनुष्यायु में छठवें गुण के ऊपर के गुणस्थान में अकालमरण नहीं होता। अर्हन्त के जैन दर्शन में अनेकान्तात्मक दृष्टि से संसारी तो माना गया है पर उनका गुणस्थान चौदहवां है। अतः अर्हन्तसे सिद्ध होने में आयुकर्म के क्षय को मरण न कहकर जैन दर्शन में पंडित-पंडित मरण अथवा निर्वाण की संज्ञा दी गयी है।

शेष तीन कर्मों की अवस्था आयु कर्म के बराबर करके 14 वें गुणस्थान के समय (अ,इ.उ,ए,ऋ, इन पांच ह्स्वाक्षर उच्चारण) में क्रम से आयु कर्म के निषेकों का क्षय होता है, अतः अकालमरण नहीं है। अनपवर्तन आयु है।

समुद्घात अकालमरण नहीं है -

आयु का क्षय ही वास्तविक मरण है। पर्यायगत आयु के पूर्ण क्षरण का नाम अकालमरण है। इस प्रकार समुद्घात को अकालमरण नहीं कह सकते। मारणान्तिक समुद्घात में वर्तमान शरीर को नहीं छोड़क़र ऋजुगति द्वारा अथवा विग्रहगति द्वारा आगे जिसमें उत्पन्न होना है ऐसे क्षेत्र तक जाकर अन्तर्मूहूर्त तक रहना होता है।

रा.वा./1/20/12/77/15

सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवों के अकालमरण की सम्भावना -

पूज्यवर आचार्य कुन्दकुन्द की भाव पाहुड़ की गाथा से सिद्ध है कि भय तथा संक्लेश आदि के कारण सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवों का भी अकालमरण सम्भव है।

देवनारकियों के अकालमृत्यु संभव नहीं -

छेदन, भेदन आदि के द्वारा उनका (नारकियों का) शरीर खण्ड-खण्ड हो जाता है, तो भी उनका अकाल में मरण नहीं होता, क्यों कि उनकी आयु घटती नहीं हैं।

स.सि. 13/5/209/10

शंका - यादि नारकी जीवों की अपमृत्यु नहीं होती है तो, जिनका शरीर भस्मीभाव को प्राप्त हो गया है, ऐसे नारकियों का पुनर्मरण कैसे बनेगा ?

समाधान - यह कोई दोष नही है क्योंकि, देह का विकार आयु का कर्म के विनाश का निमित्त नहीं है। अन्यथा जिसने बाल अवस्था के पश्चात् यौवन अवस्था को प्राप्त कर लिया है, ऐसे जीव को भी अकालमरण का प्रसंग आ जायेगा।

ध. 14/5,3101/360/9

भोगभूमिजों की अकालमृत्यु संभव नहीं-

प्रथम,द्वितीय व तृतीय काल में जो श्रेष्ठ मनुष्य होते हैं वे अपमृत्यु से रहितऔर एकान्त सुख से संयुक्त होते हैं। ज.प. /12/190

पर्याप्त होने के अन्तमुहूर्त काल तक

पर्याप्तियों को पूर्ण कर चुकने के समय से लेकर जब तक अन्तर्मूहूर्त्त नहीं बीतता है, तब तक कदलीघात नहीं करता। इस बात का ज्ञान कराने के लिए औपपादिक ... इस सूत्र में अन्तर्मूहूर्त्त पद का निर्देश किया है।

चरमशरीरियों व शलाका पुरुषों में अकालमृत्यु की सम्भावना/असम्भावना -

क्षायिक सम्यग्दृष्टि राजा श्रेणिक का अकालमरण हुआ या कालमरण ? इसका स्पष्टीकरण धवलजी के परिप्रेक्ष्य में इस प्रकार है - राजा श्रेणिक का कालमरण हुआ क्योंकि क्षायिक सम्यग्दर्शन से पूर्व उन्होंने नरकायु का बंध कर लिया था। जो परभव सम्बन्धी आयु का बन्ध कर लेता है, उसका अकालमरण नहीं होता है। कहा भी है - परभव सम्बन्धी आयुबंध हो जाने के बाद भुज्यमान आयु का कदलीघात नहीं होता। धवल 10, पृ.237, 332, 256 आदि।

वज्र वृषभनाराच संहनन वालों की आयु के असमय में उदीरणा (कदलीघात) होती है यानहीं ? उत्तमदेह (उत्तम संहनन वाले) चक्रधर आदि के अनपवर्त आयु का नियम नहीं हैं क्योंकि, अंतिम चक्रवर्ती ब्रह्मदत्त तथा कृष्ण वासुदेव आदि की आयु का बाह्य निमित्तों के वश से कदलीघात हुआ है।

कहा भी है -

'अन्तस्य चक्रधरस्य ब्रह्मदत्तस्य वासुदेवस्य च कृष्णस्य अन्येषां च तादृशानां बाह्य निमित्त नशादायुरपवर्तदर्शनात् ।।'' रा.वा./2/53/6

'चरमदेहा' पाठ भी मिलता है। किन्तु श्री श्रुतसागर सूरि ने तत्त्वार्थ वृत्तिटीका में चरमशरीरी गुरुदत्त,पांडव आदि का मोक्ष उपसर्ग के समय होने से उनकी अपमृत्यु स्वीकार की है, मात्र चरमशरीरियों में उत्तम पुरुष तीर्थंकर की अपमृत्यु नहीं मानी है। इस प्रकार मतभेद होते हुए भी पूज्यपादाचार्यजी का कथन विशेष माननीय है, क्योंकि वे महान आचार्य थे तथा उनके कथन का समर्थन श्री अकलंक देवादि आचार्यों ने भी किया था।

आचार्य प्रभाचंद्र विरचित तत्वार्थवृत्ति पद एवं श्रुतसागर रचित तत्वार्थ वृत्ति टीकानुसार चरमशरीरी गुरुदत्त पाण्डव आदि का अग्नि के द्वारा अकालमरण देखा जाता है। जबकि सर्वाथसिद्धि एवं राजवार्तिक में इसे अकालमरण नहीं कहा है। श्री जयधवला पु. 10/237 के अनुसार पाण्डवादि के अकालमरण नहीं ।

क्या अकालमरण टल सकता है -

हाँ अकालमरण टल सकता है। रोगोपचार, विषादि वमन, सर्पादि के प्रतिकार से अकालमरण को टाला जा सकता है।

क्या आत्महत्या करने वालों को नरक ही जाना पड़ता है -

जब हम वरांग चरित्र का अध्ययन करते हैं तो हमे पढ़ने को मिलता है कि शील रक्षार्थ महिला द्वारा आत्महत्या करने से भी देवों में जन्म की सम्भावना बतायी है।

देवायु का बन्ध पूर्व में होने पर विषादि पान से भवनत्रिक में जन्म होता है।

जो लोग नियतिवादी बने रहते हैं वह गृहीत मिथ्यादृष्टि है। एकान्त मिथ्यावाद को पोषण करने वाले हैं।

अकालमरण के न मानने पर हानि -

यदि अकालमरण न माना जाए तो सर्वप्रथम तो यह आगम का ही अपवाद है। जीवदयाका सम्पूर्ण उपदेश ही निरर्थक माना जाएगा। सर्पादि के काटने पर उपचार कराना निरर्थक हो जाएगा। ■

सम्मानीय लेखकों से निवेदन - परम पूज्य आचार्यश्री विद्यासागरजी के जीवन, साहित्य, शिष्य परम्परा, चिंतन, चरित्र की विशेषताओं से संबंधित तथा उनके राष्ट्रीय, शैक्षणिक,आर्थिक और दयादोदय आरोग आदि अभियानों पर केन्द्रित लेख, कविता, संस्मरण लिखकर हमें शीघ्र प्रेषित करें एवं जागरुक साहित्यकार की भूमिका का निर्वहन करें।

हमारे गौरव

अविनीत गंग

तदंगल माधव का पुत्र एवं उत्तराधिकारी अविनीत कोंगुणिवर्म-धर्म-महाराजधिराज कदम्ब नरेश काकुत्स्थ वर्मन का दौहित्र और शान्तिवर्मन एवं कृष्णवर्मन प्रथम का प्रिय भागिनेय था। अपने पिता की मृत्यु के समय वह माता की गोद में छोटा सा शिशु मात्र था। शिलालेखों में उसे शतजीवी कहा गया और उसका शासनकाल बहुत दीर्घकालिन सूचित किया गया है। यह नरेश बड़ा पराक्रमी और धर्मात्मा था।कहा जाता है कि किशोरवय में ही एक बार उसने जिनेन्द्र की प्रतिमा को सिर पर धारण करके भयंकरबाढ़ से बिफरती कावेरी को अकेले पांव पयादे पार किया था। उसके गुरु जैनाचार्य विजयकीर्ति थे, जिनकी देखरेख में उसकी शिक्षा-दीक्षा हुई थी। नोनमंगल ताम्रशासन के अनुसार सन् 430 ई. में गंगराज अविनीत ने स्वगुरु विजयकीर्ति को मूलसंघ के चन्दननन्दि आदि गुरुओं द्वारा स्थापित उरनूर के अर्हत् मंदिर एवम् विहार के लिये दान दिया था। सन् 442 ई. में (हसकोटे) ताम्र शासन द्वारा उसके एक अन्य अर्हतायतन को दान दिया था। इस लेख में जैनाचार्य सर्वनन्दि के प्राकृत लोकविभाग (458 ई.) में उल्लिखित तन्नाम पल्लवनरेश से अभिन्न प्रतीत होता है। मर्करा ताम्र पात्र से ज्ञात होता है कि 466 ई. में अविनीत ने राजधानी लालवननगर की जैन वसदि के लिये दान दिया था। सुप्रसिद्ध दिगम्बराचार्य देवनन्दि पूज्यपाद (लगभग 464-524 ई.) को राजा ने अपने पुत्र युवराज दुर्विनीत का शिक्षक नियुक्त किया था। अभिलेखों में महाराज अविनीत गंग को विद्वतजनों में प्रमुख मुक्तहस्तदानी और दक्षिणा पथ में जाति व्यवस्था एवं धर्म संस्थाओं का प्रधान संरक्षक बताया है और लिखा है कि इस नरेश के हृदय में महान जिनेन्द्र के चरण अचल मेरु के समान स्थिर थे। पेरूर के जिनालय पुन्नाट देश की जैन वसदियों तथा अन्य जिनायतनों को भी उसने दान दिये थे। साथ ही उसने अपनी राज्यशक्ति और समृद्धि को भी अक्षुण्ण रखा था। उसका शासन प्रबंध भी उत्तम था। ■

केशलैश योजना में सुरक्षा के लिए जनअभियान चलाएगा -लुनिया

उज्जैन। देश में नोटबंदी के बाद से ही देशमें कैश को लेकर हाहाकार पर पीएम मोदी ने देश को कैशलेश होने कि गुहार लगाई है तो वहीं सरकार ने नई-नई योजनाएं लेकर आ रही है। जिसका प्रचार-प्रसार भी सभी माध्यमों से जोर-शोर से किया जा रहा है किन्तु ऑनलाईन या कैशलेश ट्रांजिक्शन से अनजान जनता ना ठगी जाये उनको कैसे सावधानी रखी जाये इस हेतु ऑल मीडिया जर्नलिस्ट सोशल वेलफेयर एसोसिएशन द्वारा जनअभियान चलाया जायेगा।

बाल कहानी

राजा नंगा

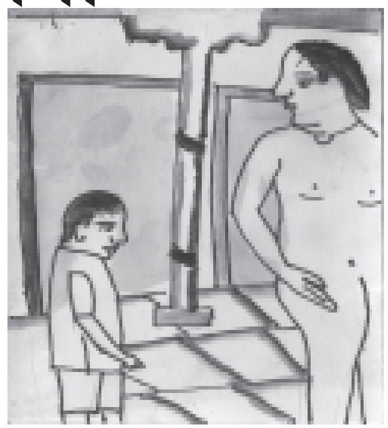

बात पुराने जमाने की है। एक बार राजा ने फैशन डिजाइन की प्रतियोगिता करायी। सारे देशों के राजाओं को सूचनायें पहुँचायीं। मुनादी फिरवा दी गयी जो दुनिया की सर्वश्रेष्ठ पोषाक सिल सकता है उसे पुरस्कार दिया जायेगा।

विभिन्न राज्यों देशों से अपनी कला बिखेरने के लिये दर्जी आये। सबने अपनी-अपनी कला प्रदर्शित करने की कोशिश की। प्रतियोगिता के अन्तिम दौर में प्रदर्शनी लगायी गई। राजा ने एक-एक करके सभी पोशाकों को सूक्ष्मदर्शी से एवं पहनकर भी देखा। सभी दरबारियों ने भी देखा। तभी राजा की नजर एक खाली कपड़े टांगने वाले हैंगर पर पड़ी। बगल में ख़ड़े एक स्थानीय दर्जी से राजा ने पूछा 'क्या यह तुम्हारा है।' दर्जी ने बडे ही गर्व से कहा - 'हाँ, हुजूर यह बेशकीमती पोशाक वाली प्रस्तुति मेरी है।' राजा दो मिनट के लिए भौंचक्का रह गया। दर्जी बोला- 'हुजूर इस पोशाक की सही खासियत है कि ये पोशाक वही देख सकता है जो विद्वान है जिसके पास ज्ञान का भंडार हो हुजूर! आप तो महाज्ञानी है। हर मसले का हल आप के पास है।' राजा ने अगल-बगल खड़े दरबारियों की तरफ नजर घुमाई। दर्जी की बात सुनते ही ही दरबारियों ने पोशाक की तारीफ में पुल बांधने शुरु कर दिये। सबने अपने आप को विद्वान घोषित करने के लिए पोशाक की तारीफ की। राजा ने भी इसे प्रथम पोशाक घोषित कर दिया और दर्जी को ईनाम दिया और अगले दिन राजा वही पोशाक पहनकर राज्य दरबार में आये। राजा को देखकर प्रजाजन एकत्रित हो गये। पर सभी चुप थे कौन अपने को अज्ञानी कहलवाता ? लेकिन एक बच्चे से रहा न गया। बड़ी मासूमियत से बोला - **'हमारा राजा नंगा है,'** बस फिर क्या था पूरी प्रजा पेट पकड़ कर हंसने लगी। ■

संस्कार गीत

संस्कार ज्योति

संस्कार नव ज्योति जले
विश्व शांति नवयोग बने।
करुणा मैत्री प्रेमभाव से
जीवों में सम भाव जगे।
नैतिकता की दिव्य ज्योति से
पाप तिमिर नश जाता है।
श्रम निष्ठा से मुक्ति मार्ग भी
सहज सरल बन जाता है
आत्म बोध सुख शांति शोध भी
स्व पर भेद सद् ज्ञान जगे
प्रातः काल उठ के जो पहले
मात पिता को नमन करे
गुरु को नमन करें नित जो भी
विनय सदा जो हृदय धरे
सद् भावों का हो विकास बहु
मानवता का मान बढ़े
सोने की चिड़िया था भारत
अंग्रेजों ने लूटा था
कर दी सिक्षा विकृत जिसने
दंभ अंग्रेजी झूठा था
हिन्दी हो भाषा जन जन की
राष्ट्र बोध अनुराग जगे

बाल कविता

केसरिया ध्वज

केसरिया ध्वज सबसे प्यारा
दुनिया में है सबसे न्यारा
इसका मान न घटने देंगे
चाहे जान भले ही देंगे।
कुंदकुंद ने यह फहराया।
समंतभद्र ने मान बढ़ाया।
सत्य अहिंसा का प्रतीक यह
विश्वशांति का है प्रतीक यह
जैन धर्म की महिमा गाये
तत्त्व बोध सद् ज्ञान बतायें
मुक्ति पथ बतलाये प्यारा
केसरिया ध्वज सबसे प्यारा।

हास्य तरंग

■ सास नई बहू से -मैं घर की गृहमंत्री, ससुर वित्त मंत्री, बेटा आपूर्त्ति मंत्री, बेटी योजना मंत्री, बहू तुम कौन सा विभाग लेना चाहोगी।

बहू - मैं विपक्ष में बैठना पसंद करूंगी ।

■ सिटी बस में दो लड़कियां सीट के लिए लड़ रही थी। परिचालक ने कहा - लड़ो मत, जो उम्र में बड़ी हो, बैठ जाओ। फिर क्या दोनों रास्ते भर यही कहती रही-दीदी आप बैठ जाओ और फिर सीट खाली पड़ी रही।

■ एक दोस्त दूसरे दोस्त से - यार पत्नी मायके जाकर रोज फोन क्यों करती है ?

दूसरा दोस्त -वेरी सिंपल, ताकि पति को याद रहे कि मुसीबत टली नहीं, फिर आने वाली है।

■ दो वकील अदालत में बहस के दौरान व्यक्तिगत आरोपं पर उतर आये। एक ने कहा तुमसे बड़ा मूर्ख आज तक नहीं देखा। दूसरे ने पलट कर कहा - मैंने भी आज तक तुमसे बड़ा मूर्ख नहीं देखा। दोनों की तू-तू, मैं-मैं देखकर जज ने मेज पर हथोड़ा मारते हुए कहा- आर्डर-आर्डर आप शायद दोनों भूल रहे हैं कि मैं भी यहाँ बैठा हूँ।

■ नेताजी (डॉक्टर से) मेरी टेस्ट रिपोर्ट अंग्रेजी भाषा में है कृपया मेरी भाषा में समझाइये।

डॉक्टर- आपकी रिपोर्ट अनुसार ब्लड प्रेशर घोटालों की तरफ बढ़ रहा है। फेफड़े झूठे आश्वासन दे रहे हैं, किडनी व हार्ट कभी भी त्याग पत्र दे सकते हैं **– जिनेन्द्रकुमार जैन,**
बाकल वाले, इन्दौर

पिच्छिका परिवर्तन

इन्दौर । देश अभीक्षण ज्ञानोपयोगी पट्टाचार्य श्री 108 अभिनंदनसागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य आचार्यश्री 108 उदार सागरजी महाराज ससंघ मुनिश्री उपशांतसागरजी, मुनिश्री उत्कर्षसागरजी, क्षुल्लिकश्री उपासनामति व क्षुल्लिकाश्री उत्तीर्णमति माताजी का पिच्छिका परिवर्तन दिनांक 4 दिसम्बर 2016,रविवार को व इन्दौर को श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर, तीर्थंकर वाटिका, ए.बी. रोड़, इन्दौर में हुआ। पिच्छि देने का सौभाग्य ब्रह्मचारी भाई, ब्रह्मचारिणी बहनें एवं अनेक श्रावकों को मिला। तथा पुरानी पिच्छि लेने का सौभाग्य क्रमशः श्रीमती शिरोमणि-ऋषभजी जैन, श्रीमती सुषमा जैन सागर, श्रीमती प्रियंका महेन्द्र जैन पत्रकार, श्रीमती विनीता-प्रवीणकुमार जैन तथा श्रीमती कल्पना-सुरेश जैन नंदानगर, पाद प्रक्षालन वीरेन्द्र-सुनीता जैन महालक्ष्मी नगर, शास्त्र भेंट श्री विमलचंदजी, मनोजजी बाकलीवाल, श्रीमती जैन ट्रेडर्स नंदानगर, ज्ञानचंद जैन भागलपुर वाले, श्रीमती सृष्टि जैन दमोह, श्रीमती समता जैन व एकता जैन इन्दौर को सौभाग्य प्राप्त हुआ। मंच संचालन संस्कार सागर पत्रिका के प्रधान सम्पादक ब्र. जिनेश मलैया, ब्र. सुरेश मलैया, व ब्र. नितिन भैया इन्दौर ने किया।

समाचार

आचार्यश्री विमलसागरजी महाराज पर डाक टिकट जारी

दिल्ली। आचार्यश्री विमलसागरजी महाराज पर डाक टिकट माननीय संचार राज्यमंत्री श्री मनोज सिन्हा जी ने जारी की इस अवसर पर आर. के. जैन मुम्बई, श्री निर्मल जैन सेठी महासभा अध्यक्ष श्री नवीन जैन आगरा, महामंत्री जैन राजनैतिक चेतना मंच श्री सुमित जैन दिल्ली, श्री मुकेश जैन , श्री हेमचंद जैन दिल्ली उपस्थित थे।

भगवती जिन दीक्षा

देवेन्द्रनगर (पन्ना) म.प्र. । आचार्यश्री विमर्षसागरजी महाराज के करकमलों से दिनांक 1 जनवरी 2017 को ब्र. सागर भैया, ब्र. मुकेश भैया, ब्र. अरविन्द भैया एवं ब्र. दीदी विजयाकुमारी को श्री दिगम्बर जैन मंदिर देवेन्द्रनगर में भगवती जिन दीक्षा प्रदान की जायेगी ।

राधेपुरी में निकली विशाल रथयात्रा

दिल्ली । त्रिलोक तीर्थ प्रणेता पंचम पट्टाचार्य पूज्य गुरुवर आचार्य श्री 108 विद्याभूषण सन्मतिसागरजी महाराज के शिष्य ऐलाचार्यश्री 108 अतिवीरजी मुनिराज के पावन सान्निध्य में राजधानी दिल्ली की धर्मनगरी राधेपुरी स्थित श्री 1008 चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर की छठी वार्षिक रथयात्रा भव्य रूप से दिनांक 16 दिसम्बर 2016 को निकली। धर्मसभा को संबोधित करते हुए पूज्य एलाचार्य श्री ने जिनेन्द्र देव के बताये मार्ग का अनुसरण करने हेतु प्रेरित किया। एलाचार्य ने आगे कहा की श्रीजी के नगर में विहार से सुख-शांति-समृद्धि में वृद्धि होती है तथा सभी के लिए यह अत्यंत मंगलकारी अवसर होता है।

देश की सवा सौ करोड़ जनता वोट से चुनेगी इंडिया'स टैलेंट अवार्ड विनर

भोपाल। भारत में कण-कण में कला का अद्भुत समावेश है और इसमें कोई दो राय नहीं है कि हम भारतीयों ने हमेशा विश्व में अपनी कला का लोहा मनवाते हुए उनको अपनी कला की और आकर्षित किया है, किन्तु अक्सर देखा जाता है कि टैलेंट को एक अच्छा मंच नहीं मिल पाता है, इसीलिए सच्चा दोस्त समूह ने इंडियन टैलेंट को प्रोत्साहित करने एवं देश के सामने प्रस्तुत करन के लिए इंडियास टैलेंट अवार्ड फैस्टिवल नामक एक मंच लेकरआया है। इस अवार्ड फेस्टिवल में देश भर के कोई भी 1 से 14 वर्ष के बालक-बालिका एवं 16 से26 वर्ष का युवाजिसमें किसी भी प्रकार की कोई कला हो जैसे डांसिंग,सिंगिंग, एक्टिंग, स्केटिंग, पेंटिंग, कुकिंग या किसी भी प्रकार की कला में पारंगत हो तो वो खुद को नॉमिनेट कर सकते हैं। नॉमिनेशन में किड्स एवं युवाओं की श्रेणी में से 50-50 कैंडिडेट का चयन देश के अलग-अलग कला के जानकारों की 5 सदस्यीय चयन कमेटी द्वारा किया जायेगा। अवार्ड में नामांकन के आवेदन 8 जनवरी 2017 तक स्वीकार किये जायेंगे ।

एलकश्री सिद्धांत सागरजी महाराज का पिच्छिका परिवर्तन

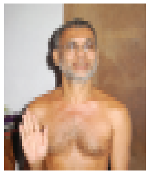

महरौनी । आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के प्रिय शिष्य एलकश्री सिद्धांत सागरजी महाराज का पिच्छिका परिवर्तन दिनांक 11 दिसम्बर 2016 को, शहीद मंच प्रांगण महरौनी में सम्पन्न हुआ। पिच्छिका देने का सौभाग्य श्रीमती रश्मि मलैया, श्रीमती अंजलि मिठिया, श्री रतनचंदजी डोंगरया, डॉ. निर्मलकुमार जैन, श्रीनिवास जैन कठरया, श्री हुकमचंदजी, श्री जमनाप्रसादजी, श्री हेमंतजी सिंघई को प्राप्त हुआ। तथा पुरानी पिच्छिका लेने का सौभाग्य श्रीमती शोभा राजू जी कठरया को प्राप्त हुआ । मंच संचालन संस्कार सागर पत्रिका के प्रधान सम्पादक ब्र. जिनेश मलैया इन्दौर ने किया ।

श्री चौंसठ ऋद्धि विधान एवं वेदियों व शिखरों का शिलान्यास

सिरोंज । श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगम्बर बड़ा मंदिर में आचार्य भगवान श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद एवं सिरोंज नसिया उद्धारक मुनिश्री 108 सुधासागरजी महाराज की जीर्णोद्धार की प्रेरणा तथा मुनिश्री 108 वीरसागरजी विशालसागरजी धवलसागरजी की जीर्णोद्धार पूर्ण होने तक श्री शान्तिनाथ विधान होने सद् प्रेरणा से 13-12-16 को 700 विधान होने पश्चात् दिनांक 13 दिसम्बर 16 को ब्र. जिनेश मलैया पंचबालयति मंदिर इन्दौर, भैया निखिलजी श शास्त्री बंडा, बागमलजी भोरिया, वीरेन्द्र भूपत के निर्देशन में श्री 1008 चौंसठ ऋद्धि विधान सानंद सम्पन्न हुआ जिसमें सौधर्म सुहागमलजी , अनूपजी घेतल महायज्ञ, सि. महेन्द्रजी समकितजी ईशान इन्द्र,सि. निर्मल जी अनिलजी, सानत इन्द्र नेमीचंद जी बागमल, महेन्द्र इन्द्र अशोक कुमारजी, अमितकुमार जी अग्गा बनायेगये तथा 12 इन्द्र भी साथ में बनाये गये तथा 14/12/16 को 6 वेदियों एवं 3 शिखरों का शिलान्यास हुआ। मूलनायक वेदी का शिलान्यास हुआ। मूलनायक वेदी कासौभाग्य श्री केशरीमलजी, सर्वेशजी श्रीमति सारिका ने प्राप्त किया । मूलनायक शिखर का सौभाग्य श्रीमति किरन जी श्री देवेन्द्रजी भूपत ने प्राप्त किया तथा श्री बड़ा मंदिर जी ट्रस्ट कमेटी ने सभी दानदाताओं, विधानकर्ताओं तथा सभी सहयोगी जनों का आभार व्यक्त करते हुये आगे भी इसी तरह सहयोग की आकांक्षा की।

आचार्य विमलसागर जन्म शताब्दी वर्ष प्रारंभ

जयपुर । वात्सल्य रत्नाकर आचार्य श्री विमलसागरजी महाराज के जन्म शताब्दी वर्ष 2015-16 का शुभारंभ राजस्थान के महामहिम राज्यपाल श्री कल्याणसिंह जी ने किया । राज्यपाल श्री ने कहा कि कोसमा में जन्में नेमिचन्द्र ने उत्तरप्रदेश के गौरव को सम्पूर्ण देश में स्थापित कर जैन धर्म के मर्म को जन-जन तक पहुंचाया सम्पूर्ण देश को ऐसे महापुरूष की जीवनी पढ़नी चाहिए । आचार्य विमलसागरजी सरलता, सहजता, समन्वयिता के प्रतिनिधि थे।

महामस्तकाभिषेक एवं चौंसठ ऋद्धि विधान एवं आचार्यश्री उदारसागरजी महाराज का 56 वां अवतरण दिवस सम्पन्न

इन्दौर । देश अभीक्षण ज्ञानोपयोगी पट्टाचार्य श्री 108 अभिनंदनसागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य आचार्यश्री 108 उदार सागरजी महाराज ससंघ सान्निध्य में दिनांक 2 से 4 महामस्तकाभिषेक एवं चौंसठ ऋद्धि विधान एवं आचार्यश्री उदारसागरजी महाराज का 56 वां अवतरण दिवस मनाया गया । कार्यक्रम इन्दौर रत्न पं. रतनलालजी शास्त्री के मार्गदर्शन एवं बा. ब्र. जयनिशांत टीकमगढ़ के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सम्पन्न हुआ । मूर्तिविराजमान करने का सौभाग्य ब्र. श्यामलाल बड़कुल को प्राप्त हुआ। ध्वजारोहणकर्ता आर.के. मैना जैन, भरत जैन शांति निकेतन, सौधर्म इन्द्र श्री वीरेन्द्र-सुनीता जैन, महायज्ञनायक श्री हर्ष-तृप्ति जैन, कुबेर सुनील-पूजा जैन, यज्ञनायक के.सी. सरोज जैन, डॉ. सनत-सुधा जैन, ईशान इन्द्र-मनोज-सुनीता जैन, सनतकुमार इन्द्र-ज्ञानचंद-चंदादेवी जैन, माहेन्द्र इन्द्र-सी.ए. अशोक-सुनीता जैन, ब्रह्म इन्द्र ऋषभ-विमला जैन, लांतवइन्द्र-अनिल-मीना पांड्या, शक्र इन्द्र-सुरेश अनिता जैन, शतारइन्द्र-अजित-मीना जैन, आनतइन्द्र-सतीश-सुलोचना जैन, प्रणात इन्द्र-राजकुमार-समता जैन, आरनेन्द्र-सूरजमल-पदमा जैन अच्युतेन्द्र सुभाष-सुधा जैन, कलश एवं दीप स्थापित कर्ता - सुधीर बांझल, राजेन्द्र कंठाली, रमेश जैन, विवेक जैन, जैनेश रोकड़िया, अभिषेक जैन गढ़ाकोटा वाले, मानमल बाबा, श्रीमती आराधना कासलीवाल, श्रीमती मंजू जैन, चित्रअनावरणकर्ता- सर्वश्री श्री प्रदीप कासलीवाल, गजेन्द्र जैन, डॉ. महेन्द्र पांड्या, मनोज बाकलीवाल, राजीव सेठी, आजाद मोदी, दीप प्रज्ज्वलनकर्ता, सचिन जैन, प्रदीप बड़जात्या, डी.के. जैन सा., धर्मेन्द्र जैन, अशोक जैन, प्रियदर्शी जैन, मूर्ति विराजमान एवं अभिषेककर्ता आजाद जैन, धर्मेन्द्र जैन, अविरल संजय जैन, विमल बाकलीवाल, जैनेन्द्र जैन, राजेन्द्र जैन, दीपेश गोधा आदि को सौभाग्य प्राप्त हुआ। पार्श्वनाथ भगवान का प्रथम अभिषेक एवं शांतिधारा करने का सौभाग्य हर्षजी जैन एवं वीरेन्द्रजी जैन, श्री नेमिनाथजी का विवेक जैन एवं अजित जैन, छत्र प्रदीप जी टड़ा एवं राजीव जी लार तथा नरेन्द्र सेठ बजरंग नगर, जिनेन्द्र जैन, सतीशजी सतना, सीमा जी बैंकवाले, भामंडल आजादजी मोदी, जे.के. हेमलता सेठी को सोभाग्य प्राप्त हुआ।

सल्लेखना

कुंथुगिरि । आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य मुनिश्री नियमसागरजी, मुनिश्री प्रबोधसागरजी, मुनिश्री वृषभसागरजी, मुनिश्री अभिनंदनसागरजी एवं मुनिश्री सुपार्श्वसागरजी महाराज के ससंघ सान्निध्य में मुनिश्री माणिक सागरजी महाराज का यमसल्लेखना पूर्वक समाधिमरण 17 दिसम्बर 2016 को रात्रि 11.55 पर श्री दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्रकुंथुगिरि में हुआ।

मुलताई (बैतूल) म.प्र. । आचार्यश्री वासुपूज्यसागर महाराज के शिष्य मुनिश्री शेष सागरजी महाराज का समाधिमरण दिनांक 25 दिसम्बर 2016, रविवार को सायं 7 बजे हुआ।

संबंधों से डर लगता है

यू तो सारा जग ही मुझको
अपना प्यारा-सा घर लगता है।
करना माफ मुझे पर यारो
संबंधों से डर लगता है।
एक बूँद हूँ पर अन्तस में
मैंने सागर को पाया है।
बनने को सागर बन जाऊँ
लेकिन तटबंधों से डर लगता हैं।
करना माफ मुझे पर यारो
संबंधों से डर लगता हैं।
चाहत है चन्दन वन महकूँ
और जीवन बगिया महकाऊं।
पर कैसे समझाऊ मन को
अब गन्धों से डर लगता हैं।

करना माफ मुझे पर यारों
संबंधों से डर लगता हैं।
प्रीति रीति की पावन धारा
तन-मन-धन सब न्यौछावर
नहीं बांधना पर बंधन में
अनुबंधों से डर लगता है।
करना माफ मुझे पर यारो
संबंधों से डर लगता हैं।

• वीरेन्द्र भूपत, सिरोंज •

आगामी आकर्षण

जुलाई 2017 से संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से संबंधित प्रश्न पूछे जायेंगे तथा जून 2017 से जून 2018 तक 13 विशेषांक प्रकाशित किये जायेंगे तथा जिनके उत्तर विद्यासागर की लहरें जो तीन भागों में प्रकाशित होंगी उसी से पूछे जायेंगे अतः आप सभी विद्यासागर की लहरें तथा संस्कार सागर अंक सुरक्षित करा सकते हैं तथा इस प्रतियोगिता में सम्मिलित होने के लिए सभी को प्रेरणा अवश्य दें। इस प्रतियोगिता में हर माह विशेष पुरस्कार के साथ वर्ष भर पूछे गये प्रश्नों में से ही एक लिखित परीक्षा संस्कार सागर कार्यालय श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इन्दौर में आयोजित की जायेगी जिसमें लाखों रूपये के पुरस्कार हों गे।

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा

माह : जनवरी 2017

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

1. .... में बताये गये जिन चैत्यालय के सब ही लक्षण उसमें थे।
2. .... के चन्द्रमा के समान ही शीतलता अथा आह्लाद को देता था।
3. इस इन्द्रकूट जिनालय के बनाने में सुयोग्य .... ने अपनी पूरी कीपूरी शक्ति,ज्ञान तथा हस्त कौशल का उपयोग किया था।
4. आर्य विबुध सदैव अपने .... की हित-कामना करते थे।
5. .... स्थापना के क्षण से ही जिन महोत्सव को पूरे वैभव के साथ प्रारम्भ करा दिया था।
6. पूरे नगर में ...... बजवाकर घोषणा की गयी थी कि जिसकी जो कुछ भी इच्छा हो वह-वही वस्तु निःसंकोच भाव से सम्राट से मांग ले।
7. सम्राज्ञी अनुपमा देवी भी श्री 1008 जिनेन्द्र देव की पुण्यमय पूजा देखने की अभिलाषा से अन्य समस्त रानियों के साथ .... को चल दी थी।
8. सम्राट.... ने एक-दो नहीं अनेक दारुण युद्धों में विजय प्राप्त करके विमल यश कमाया था।
9. जिनेन्द्र प्रभु की प्रगाढ़ भक्ति से प्रेरित होकर ही ...... स्वर्ण का कलेश लेकर सेवा में उपस्थित हुए हैं।
10 ..... के दिनों में मंदिर में रहना आवश्यक था।
11. जन्म-जरा-मृत्यु आदि की शांति के लिए......चढ़ाते हैं।
12 शुद्ध तथा अखण्डित अक्षतों की पूजा का परिपाक होने से मनुष्य .... होता है।
13. घृत के उपहार का का परिणाम सुरूप और .... शरीर होता है।
14. परपूर्ण ब्रह्मचर्य पालन करने के कारण उनके शरीर अत्यंत...... थे।
15. पूजा के समय पालन करने योग्य सब ही व्रतों को ..... से निभा रहे थे।
16. लम्बी डंडीयुक्त चमरों को जब युवक ढोरते थे तो वे गंगा की लहरों के समान .... होते थे।
17. श्रेष्ठ सुंदर परागरुपी धूल से वे .... धूसरित हो रहे थे।
18 मृदंग भेरी आदि बाजों की जोर की आवाज .... के कानों से टकरा रही थी।
19. सब फूल मुरझाने से बचाने के लिए उत्तम ..... मिश्रित जल से सींचे गये थे।
20. गली-गली में तथा उनके मोड़ो पर सुन्दर .... बनाये गये थे।

(वरांग चरित्र पृ. 281 से 289 तक)

प्रश्नों के उत्तर दीजिए -

21. पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा की नाभि में पारस मणि कहाँ पर थी ?
22. साधु को सूर्य अस्त से कितने मिनट पहले आहार छोड़ देना चाहिए ?
23. एलक शांतिसागर जी महाराज ने जीवनभर सवारी पर बैठने का त्याग कहाँ किया था ?

24. क्षुल्लक शांतिसागर जी महाराज ने कहाँ के श्रावकों के साथ गिरनार यात्रा की ?
25. क्षुल्लिक शांतिसागरजी महाराज ने एलक दीक्षा कहाँ ली।
26. यह किसने कहा कि इस जीव का त्रिकाल और त्रिलोक में सम्यक्त्व व सदृश कोई हितकारी नहीं है ?
27. यह किसने कहा कि सर्वज्ञ जिनेन्द्र से सर्व विद्याओं की उत्पत्ति हुईहै ?
28. किसने भगवान को मंत्र वेत्ता, मंत्र निर्माता, मंत्र धारक तथा मंत्र मूर्ति कहा है ?
29. एलक सुबलसागरजी के दर्शन क्षुल्लक शांतिसागरजी ने कहाँ पर किस सन् में किये थे ?
30 क्षुल्लक शांतिसागरजी महाराज ग्वालियर किस सन् में आये थे ?

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए -

31. दिल्ली के लाल किले के सामने अवस्थित लाल मंदिर नाम से ख्यात जिनालय ...... के प्रभाववश अत्याचारी शासकों तथा धर्मान्धों द्वारा न हड़पा जा सका।
32 सदाचार, श्रद्धा तथा दृढ़तापूर्वक आराधना करने वालों के लिए वे मंत्र .....के समान कामना पूर्ण करते हैं।
33. आचार्य महाराज ने मंत्रसाधक जैन बन्धु को सर्पका विष उतारने वाला सविधि ...... सिखाया था।
34. महाराज जैन मंत्र में एक और महत्व की बात ज्ञात हुई कि इसमें सर्प का विष..... दूर हो जाता है।
35. .... के गुणों का कीर्तन से विघ्न नष्ट होते हैं, भय दूर होते हैं। दुष्ट देवता आक्रमण नहीं करते हैं।
36. वास्तव में कुदेव आदि ...... के अनायतन है।
37. जिसने आत्मा में लगे हुए मिथ्यात्व को दूरा करा दिया, उसने ... का अनंत कल्याण कर लिया।
38 निर्ग्रन्थ गुरु और जिनेन्द्र की वाणी को शिरोधार्य करना ...... है।
39. चातुर्मास के बाद वे जहाँ-जहाँ गये, वहाँ-वहाँ उन्होंने ...... के राक्षस को भगा दिया।
40. ऐसे प्रभावशाली दिगम्बर मुनि के कारण इस क्षेत्र को .... नाम प्राप्त हुआ।

(चारित्र चक्रवर्ती पृ.68 से 77 तक)

संक्षेप में उत्तर दीजिये :

41. यदि डॉक्टर से सावधानीपूर्वक उपचार करते हुए जीव मर जाने पर पाप लगेगा कि नहीं वह कौन कहलायेगा ?
42. यदि किसी व्यक्ति ने दुश्मन को गाली मारी वह मरा भी नहीं तो वह कौन कहलायेगा ?
43. किसी जीव के प्राण घात होने को क्या कहते हैं ?
44. आप अत्याचार से काम कर रहे हैं और जीवों की हिंसा हो भी जावे तो वह किस कोटि में आयेगी ?
45. किसान हमेशा दूसरों का क्या करता है ?

पवित्र मानव जीवन पृ.–12 छंद 47-49)

46. संस्कार मेला 2016 का आयोजन कहाँ, किसके सान्निध्य में हुआ ?
47. संस्कार मेला 2016 का संचालन किसने किया था ?
48. आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज की पिच्छी किसे प्राप्त हुई ?
49. मुनिश्री समयसागरजी महाराज की पिच्छि किसे प्राप्त हुई ?
50. आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित वर्तमान में कुल कितने शिष्य हैं ?

(संस्कार सागर दिसम्बर 2016)

अखिल भारतीय संस्कार सागर परीक्षा : जनवरी 2017

प्रश्नपत्र भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी

नाम ....स्थान ....

उम्र ....सदस्यता क्र. ....

पूर्ण पता ....

पिन कोड .... फोन नं...................... (एस.टी.डी.) ....

1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31	32	33	34	35
36	37	38	39	40
41	42	43	44	45
46	47	48	49	50

आपके नगर के संवाददाता का नाम .... हस्ताक्षर

नियम :– .... जब तक दूसरा प्रश्न–पत्र भरकर नहीं भेजते तब तक के लिए।

वर्ग पहेली : 2 1 3

1		2	3	4	■	5	6	
	■	7			■	8		■
	■	■	■		■	9		10
11	12	■	13	■	14	■	■	
15		■	16			■	17	
■	■	18		■		■	19	
20			■	21		22		■
	■		■		■	23		
24			■	25			■	■

ऊपर से नीचे

1. सिद्धांतसार संग्रह ग्रंथ के रचयिता (5)
2. तरल पदार्थ (2)
3. वस्तु स्वरूप की भूल का नाम , विभ्रम (2)
4. लकड़ी कागज खाने वाला कीट (4)
5. वस्तु स्वभाव का नाम,दया जिसका मूल हो (3)
10. उपहार, भेंट (4)
12. तू का भाव, मध्य पुरुष का संकेत, आपका(2)
13. लज्जा, हया (3)
14. तीर्थंकर के मुख्य प्रवक्ता (4)
17. प्रकाशमान (5)
18. जनता का विचार, जनता का मत(4)
20. उत्तर पूर्व दिशा का नाम (3)
21. पति, प्रिय व्यक्ति (3)
22. स्वार्थ, काम पड़ना (3)

बाएँ से दाएँ

1. भारत के प्रधानमंत्री (6)
5. प्रथम स्वर्ग के इन्द्र का नाम (3)
7. शक, संदेह (2)
8. नम, आर्द्र, गीला (2)
9. नमस्कार करने का भाव (3)
11. पुल (2)
15. गीला,आर्द्र (2)
16. रमने का भाव (3)
18. यम (2)
19. गण का भाव (2)
20. सत्य (4)
21. सात स्वरों का समूह (4)
23. घिसावट, घिसने का भाव (2)
24. नक्षत्र (3)
25. मात्र,केवल (उर्दू) (3)

वर्ग पहेली : 2 1 2 का हल

1 हि	2 म	वा	3 न	■	4 अ	श्व	5 से	6 न
7 त	रु	■	8 दी	9 प	क	■	10 तु	म
■	11 भू	त	■	12 क	लं	13 क	■	स्का
14 श्रु	ति	■	15 दि	वा	क	र	■	र
त	■	16 प	व	न	■	■	17 ज	■
18 ज्ञा	19 ता	■	स	■	20 प	21 छ	ता	22 ना
23 न	न	■	■	24 शी	त	ल	ना	थ
■	25 से	26 व	क	■	वा	■	■	■
27 वा	न	र	■	28 ता	र	ण	हा	र

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

वर्ग पहली प्रतियोगिताओं के विजेताओं को **हरसाहमल सत्येन्द्रकुमार जैन** (गोकुल बाजार, रेवाड़ी, हरियाणा) की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। प्रथम पुरस्कार : 101रु. द्वितीय पुरस्कार 51 रू., तृतीया पुरस्कार 41 रू.) प्रतियोगिता भरकर भेजने की अंतिम तिथि माह की 25 तारीख रहेगी ■